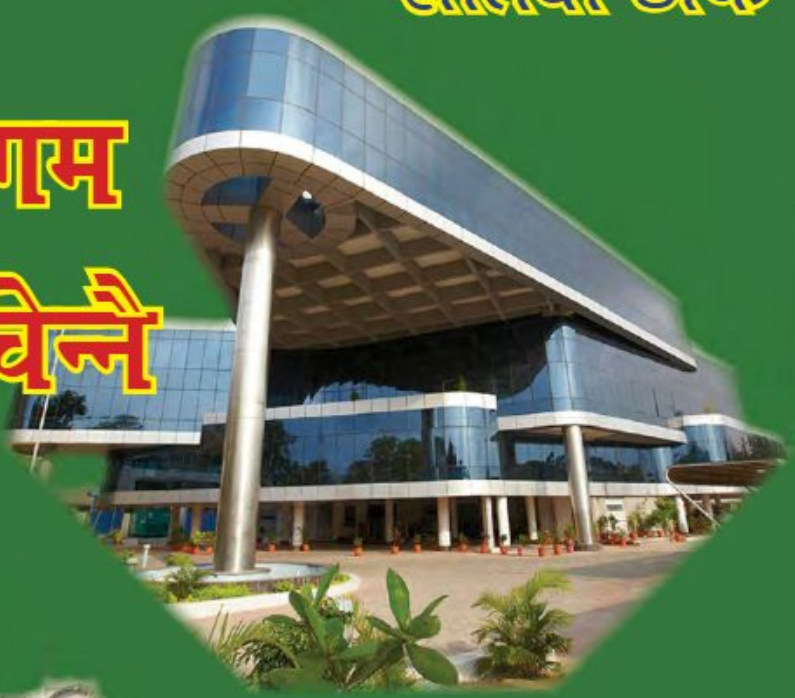




अन्नालयम्

स्वातर्वा अंक

भारतीय खाद्य निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



शब्दभाषा गृह पत्रिका



वित्तीय वर्ष 2026-27



“हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी पहचान और संस्कारों की निवांठ धरोहर है। इस अवसर पर आइए, हम सब मिलकर हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाने और ऊँहें आने वाली पीढ़ियों तक गर्व के साथ पहुंचाने का संकल्प लें। विश्व पटल पर हिंदी का बढ़ता सम्मान हम सबके लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है।”

श्री नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

“हर भाषा को, हर बोली को समृद्ध करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। सभी भाषा की समृद्धि से ही हिंदी समृद्ध हो सकती है।”

श्री अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री





अन्नालयम



रबिन्द्र अववाल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मुख्यालय, नई दिल्ली



संदेश

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, तमिलनाडु द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” के सातवें अंक के प्रकाशन से, निगम के कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने की दिशा में सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। सरल, सुबोध एवं सुसज्जित शैली में प्रस्तुत इस पत्रिका की सामग्री ने केवल हिन्दी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करती है, बल्कि कार्मिकों में राजभाषा के प्रति जागरूकता, आत्मीयता एवं रचनात्मक अभिरुचि का भी विकास करती है।

तमिलनाडु जैसे हिन्दीतर प्रदेश में हिन्दी के सशक्त एवं सतत प्रयोग को बनाए रखना, राजभाषा हिन्दी के प्रति निगम की प्रतिबद्धता का परिचायक होने के साथ-साथ भाषाई समन्वय एवं राष्ट्रीय एकता की भावना को भी सुदृढ़ करता है। मुझे विश्वास है कि ऐसे प्रयासों से राजभाषा हिन्दी का प्रयोग और अधिक व्यापक, प्रभावी एवं सुदृढ़ होगा तथा “अन्नालयम” पत्रिका इस दिशा में एक प्रेरणादायी भूमिका निभाती रहेगी।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल एवं इससे जुड़े सभी सहयोगियों को इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

रबिन्द्र

(रबिन्द्र अववाल)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



अन्नालयम



जयंत शर्मा
कार्यकारी निदेशक
(आंतरिक अंकेक्षण/राजभाषा)
मुख्यालय, नई दिल्ली



संदेश

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै की राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” के 7वें अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई। यह पत्रिका न केवल कार्मिकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच है, बल्कि राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं कार्यालयीन प्रयोग को प्रोत्साहित करने का एक प्रभावी माध्यम भी है।

भारतीय खाद्य निगम में हमारा प्रयास है कि कार्यालयीन कार्य, पत्राचार, रिपोर्ट, बैठकें, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा डिजिटल माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़े और राजभाषा संबंधी सभी प्रावधानों का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित हो। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी तथा कृत्रिम मेधा (एआई) ने हिंदी में कार्य करना पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सरल और सुविधाजनक बना दिया है। अतः हम सभी का साझा दायित्व है कि इन तकनीकी साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए हिंदी में कार्य संस्कृति को और अधिक सुदृढ़ बनाएं और भारतीय भाषाई विरासत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शायें।

जयंत शर्मा

(जयंत शर्मा)
कार्यकारी निदेशक(राजभाषा)



अन्नालयम



जेसिंता लाखरस, भा.प्र.से.
कार्यकारी निदेशक(दक्षिण)
आंचलिक कार्यालय, चेन्नै



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हो रहा है कि भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र की क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” के सातवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा, वैचारिक समृद्धि और सामूहिक सहभागिता का सशक्त मंच है।

भारतीय खाद्य निगम देश की विविध सांस्कृतिक एवं भाषाई विरासत का सम्मान करते हुए नवाचार, नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण के अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रही है। आज भले ही आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा साइंस जैसे अत्याधुनिक क्षेत्र भविष्य की दिशा निर्धारित कर रहे हों, किंतु विचारों की अभिव्यक्ति, ज्ञान के आदान-प्रदान और मानवीय संवेदनाओं के संप्रेषण में भाषा का महत्व सदैव सर्वोपरि रहेगा।

इस अवसर पर मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल तथा इससे जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

जेसिंता

(जेसिंता लाखरस, भा.प्र.से.)
कार्यकारी निदेशक (दक्षिण)



अन्नालयम



हर्षित सिंह
महाप्रबंधक(राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, चेन्नै

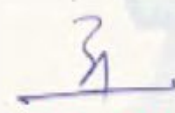


संदेश

राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका 'अन्नालयम' का भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र में नियमित प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन तथा उसके प्रचार-प्रसार की दिशा में एक अत्यंत सराहनीय एवं महत्वपूर्ण पहल है। यह पत्रिका केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा, वैचारिक समृद्धि तथा भाषाई प्रतिबद्धता का सशक्त परिचायक भी है। साथ ही, यह उन्हें अपनी मौलिक रचनाओं के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रति आत्मीयता और रचनात्मकता को अभिव्यक्त करने का उत्कृष्ट मंच प्रदान करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "अन्नालयम" का यह सातवाँ अंक भी अपने उत्कृष्ट एवं विविधतापूर्ण विषय-वस्तु के माध्यम से पाठकों को प्रेरित करेगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ साहित्यिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

मैं "अन्नालयम" के सातवें अंक के सफल प्रकाशन पर संपादकीय मंडल, सभी रचनाकारों तथा इसके प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि यह पत्रिका निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करती रहे तथा राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं भारतीय भाषाओं के विकास में अपनी सार्थक भूमिका निभाती रहे।


(हर्षित सिंह)

महाप्रबंधक (राजभाषा)



अन्नालयम



असीम छाबड़ा
महाप्रबंधक(क्षेत्र)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



संदेश

तमिलनाडु क्षेत्र की क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” के अंक-7 को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। किसी भी कार्यालय की गृह पत्रिका केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच नहीं होती, बल्कि वह उस संस्थान की सामूहिक चेतना, बौद्धिक ऊर्जा, सृजनात्मक प्रतिभा और मानवीय संवेदनाओं का जीवांत दर्पण भी होती है। “अन्नालयम” ने अपने पिछले अंकों के माध्यम से हमारे कार्यालय परिवार की प्रतिभाओं, उपलब्धियों, अनुभवों एवं विचारों को एक सूत्र में पिरोने तथा उन्हें सुसज्जित, सार्थक एवं प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया है।

हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की परिचायक भी है। जिस प्रकार भारतीय खाद्य निगम अपने ध्येय वाक्य “सबको अन्न, सबको जीवन” के अनुसार राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, उसी प्रकार राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी हमारा कार्यालय निरंतर प्रगति करते हुए नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नै द्वारा हमारे कार्यालय को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इसी क्रम में एक और उल्लेखनीय उपलब्धि हमारे लिए विशेष गर्व का विषय है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), चेन्नै द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु हमारे कार्यालय को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। साथ ही, हमारी राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” अंक-6 को उत्कृष्ट राजभाषा गृह पत्रिका के रूप में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। ये सम्मान हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता, निरंतर प्रयास और राजभाषा के प्रति समर्पण के प्रमाण हैं।

इस अवसर पर मैं राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। “अन्नालयम” के इस अंक को साकार करने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों, संपादकीय सहयोगियों एवं सहयोगकर्ताओं का भी मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ। मुझे विश्वास है कि “अन्नालयम” अंक-7 भी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं मनोरंजक सिद्ध होगा तथा यह हमारे कार्यालय परिवार की रचनात्मकता और सामूहिक उपलब्धियों को एक नई पहचान प्रदान करेगा।

“अन्नालयम” की निरंतर प्रगति एवं सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

34

(असीम छाबड़ा)
महाप्रबंधक (क्षेत्र)



अन्नालयम



संजीव कुमार
उप महाप्रबंधक(क्षेत्र)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” के सातवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा केवल विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति को जोड़ने वाली सशक्त कड़ी भी है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने विचारों, अनुभवों और संवेदनाओं को दूसरों तक पहुँचाता है तथा सामाजिक एकता को सुदृढ़ करता है। भारत अपनी विविध भाषाओं, बोलियों, संस्कृतियों और परंपराओं के कारण विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इस बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक परिवेश में हिंदी संपर्क भाषा के साथ-साथ भारत संघ की राजभाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देश के विभिन्न भागों में हिंदी किसी न किसी रूप में सहजता से बोली, समझी और अपनाई जाती है। इसकी व्यापकता और जन-मानस से गहरे जुड़ाव के कारण हिंदी भारतीय एकता और सांस्कृतिक विविधता को जोड़ने वाली सशक्त भाषा के रूप में उभरती है।

इसी भावना को अभिव्यक्त करते हुए “अन्नालयम” का यह अंक कार्यालय परिवार की रचनात्मक प्रतिभाओं, उपलब्धियों, अनुभवों एवं विचारों को एक मंच प्रदान करने का सुंदर प्रयास है। यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है, बल्कि हमारे सहकर्मियों की सृजनात्मकता और बहुआयामी प्रतिभाओं को भी सामने लाती है।

मुझे विश्वास है कि “अन्नालयम” निरंतर इसी प्रकार नवीन विचारों, उपयोगी जानकारियों और विविध रचनात्मक सामग्री के माध्यम से पाठकों को समृद्ध करता रहेगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता और उसके प्रयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस अंक की सफलता के साथ-साथ पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की भी मैं मंगलकामना करता हूँ। “अन्नालयम” निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो और भविष्य में भी इसी उत्साह एवं गरिमा के साथ अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता रहे, इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ इसके सफल प्रकाशन हेतु पुनः हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

संजीव कुमार

(संजीव कुमार)
उप महाप्रबंधक (क्षेत्र)



अन्नालयम



अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा क्षेत्रीय राजभाषा "गृह" पत्रिका "अन्नालयम" के सातवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भारत विविध भाषाओं, बोलियों, संस्कृतियों और परंपराओं का देश है। हमारी भाषाई विविधता हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। इस विविधता के बीच भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, बल्कि लोगों को जोड़ने, विचारों के आदान-प्रदान और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम भी है।

संविधान में हिंदी के संबंध में की गई व्यवस्था इस बात को दर्शाती है कि हिंदी को केवल कार्यालयीन कार्य की भाषा के रूप में नहीं, बल्कि देश के विभिन्न क्षेत्रों और जनसमुदायों के बीच संवाद एवं संपर्क के प्रभावी माध्यम के रूप में विकसित करने की भावना निहित है। हिंदी की व्यापकता, सहजता और भारतीय जनमानस से उसके गहरे जुड़ाव ने उसे देश के भाषाई परिदृश्य में विशिष्ट स्थान प्रदान किया है।

इसी संवैधानिक भावना को आत्मसात करते हुए "अन्नालयम" का यह सातवाँ अंक राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का परिचायक है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय परिवार की रचनात्मक प्रतिभा, साहित्यिक अभिरुचि, अनुभवों, उपलब्धियों और विचारों को एक साझा मंच प्रदान करती है। साथ ही, यह हिंदी के प्रति प्रेम, सम्मान और उसके निरंतर प्रयोग की भावना को भी सुदृढ़ करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि "अन्नालयम" का यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं रुचिकर सिद्ध होगा तथा कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए सकारात्मक वातावरण निर्मित करेगा। हम सभी का यह सामूहिक प्रयास हिंदी को सरल, सहज, सुबोध एवं प्रभावी रूप में अपनाने की दिशा में एक सार्थक कदम होगा।

"अन्नालयम" के सातवें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।
जय हिंद! जय हिंदी!

(अरुण कुमार)

(अरुण कुमार)
उप महाप्रबंधक(राजभाषा)



अन्नालयम



संजय कुमार बिस्वास
उप महाप्रबंधक (सामान्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



संदेश

राजभाषा हिंदी हमारे देश का गौरव है। यह केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी समृद्ध संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं और राष्ट्रीय एकता का सशक्त प्रतीक भी है। हिंदी के प्रति सम्मान और उसके अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करना हम सभी का दायित्व है। अतः कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने तथा राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु निरंतर सार्थक प्रयास किए जाना आवश्यक है। विभागीय कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार की पत्रिकाएँ न केवल राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा, साहित्यिक अभिरुचि और सृजनशीलता को अभिव्यक्ति का सशक्त मंच भी प्रदान करती हैं।

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” का प्रकाशन इसी दिशा में उठाया गया एक सराहनीय पहल है। यह पत्रिका कार्यालय में हिंदी के वातावरण को सुदृढ़ करने के साथ-साथ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी भावनाओं, अनुभवों, विचारों तथा रचनात्मक प्रतिभा को हिंदी के माध्यम से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करेगी। साथ ही, यह कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने और राजभाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “अन्नालयम” का यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं रुचिकर सिद्ध होगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यालयीन कार्यों में उसके व्यापक प्रयोग को बढ़ावा देने में अपनी सार्थक भूमिका निभाएगा।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्साह, परिश्रम और रचनात्मक योगदान की मैं हृदय से सराहना करता हूँ तथा “अन्नालयम” के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। आशा है कि यह पत्रिका निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रहेगी।

(संजय कुमार बिस्वास)
उप महाप्रबंधक (सामान्य)



अन्नालयम



संजय कुमार चौधरी
उप महाप्रबंधक (सामान्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै की क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” अंक-7 के माध्यम से हिंदी भाषा की समृद्ध अभिव्यक्ति का यह सशक्त एवं सृजनात्मक मंच हम सभी के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है।

“अन्नालयम” केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारी राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता, संवेदनशीलता और सृजनशीलता का प्रतीक है। इस पत्रिका का उद्देश्य न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार को सुदृढ़ करना है, बल्कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के सरल, सहज एवं व्यावहारिक प्रयोग को प्रोत्साहित करना भी है।

मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित विविध रचनात्मक विधाओं, लेख, कविता, संस्मरण आदि विषयों पर आधारित विचार पाठकों को नई ऊर्जा, प्रेरणा एवं सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करेंगे। यह पत्रिका हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रतिभा को अभिव्यक्ति देने और उसे निखारने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेगी तथा हिंदी के प्रति उनकी रुचि को और अधिक गम्भीर बनाएगी।

इस अवसर पर मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल, सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से “अन्नालयम” का यह सुंदर एवं ज्ञानवर्धक अंक साकार हो सका है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि “अन्नालयम” निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

“अन्नालयम” के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(संजय कुमार चौधरी)
उप महाप्रबंधक (सामान्य)



अन्नालयम



राजेश वर्मा
उप महाप्रबंधक(लेखा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि “अन्नालयम” के सातवें अंक का निरंतर एवं सफल प्रकाशन भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा किया जा रहा है। यह पत्रिका हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, सृजनशीलता एवं कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के प्रभावी प्रयोग का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है।

हमारा सतत प्रयास है कि हिंदी को केवल एक औपचारिक भाषा के रूप में न देखकर, उसे हमारी कार्य-संस्कृति का अभिन्न अंग बनाया जाए। हिंदी का सरल, सहज एवं व्यावहारिक प्रयोग न केवल कार्यालयीन कार्यों को अधिक प्रभावी बनाता है, बल्कि हमारे बीच संवाद, संवेदना एवं आत्मीयता को भी सुदृढ़ करता है।

“अन्नालयम” जैसे रचनात्मक मंच अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा, विचारों और भावनाओं को हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। निश्चित रूप से यह प्रयास राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई दिशा एवं गति प्रदान करेगा।

मैं “अन्नालयम” के सातवें अंक के प्रकाशन से जुड़े समस्त कार्मिकों, संपादकीय मंडल एवं रचनाकारों को अपनी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक मंगलकामनाएँ।

“अन्नालयम” निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करें और राजभाषा हिंदी के विकास एवं संवर्धन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहे, इसी शुभकामना के साथ।

(राजेश वर्मा)
उप महाप्रबंधक (लेखा)



अन्नालयम



कामता प्रसाद
सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा क्षेत्रीय राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” का सातवाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। किसी भी जीवंत एवं प्रगतिशील संस्थान में गृह पत्रिका केवल विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह संस्थान के संकल्पों, उपलब्धियों, रचनात्मक गतिविधियों तथा सामूहिक प्रयासों का सजीव दर्पण भी होती है। इस दृष्टि से “अन्नालयम” हमारे क्षेत्रीय कार्यालय की कार्य-संस्कृति, रचनात्मक चेतना और साहित्यिक अभिरुचियों को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण मंच है।

राजभाषा हिंदी हमारे देश की गौरवशाली विरासत है। यह हमारी संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक सरोकारों तथा राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना को सुदृढ़ करने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। अतः यह हमारा दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने तथा राजभाषा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर सार्थक एवं प्रभावी प्रयास किए जाएँ।

विभागीय कार्यों में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को बढ़ावा देने में गृह पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसी पत्रिकाएँ न केवल हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा, अनुभवों और विचारों को हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्त करने का अवसर भी प्रदान करती हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “विविधता में एकता” की भावना को आत्मसात करते हुए “अन्नालयम” अपने बहुआयामी उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में निरंतर अग्रसर होगी और उन्हें प्राप्त करने में पूर्णतः सफल रहेगी। यह पत्रिका भारतीय खाद्य निगम परिवार के सभी सदस्यों तथा उनके परिजनो के लिए वैचारिक, साहित्यिक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त, प्रेरणादायी और आत्मीय मंच बनेगी। साथ ही, यह हमारे बीच आपसी संवाद, सौहार्द और सहभागिता की भावना को और अधिक प्रगाढ़ करने में भी सहायक सिद्ध होगी।

इस महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पहल के सफल प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों, रचनाकारों तथा संपादकीय मंडल को मैं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आप सभी के समर्पण, सहयोग एवं रचनात्मक सहभागिता ने “अन्नालयम” को सार्थकता प्रदान की है। मेरी हार्दिक कामना है कि “अन्नालयम” का यह साहित्यिक एवं राजभाषायी सफर निरंतर, निर्बाध एवं गरिमापूर्ण रूप से आगे बढ़ता रहे तथा आने वाले वर्षों में यह नई उपलब्धियों और नए आयामों को प्राप्त करें।

“अन्नालयम” के सातवें अंक के सफल प्रकाशन एवं इसके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कामता प्रसाद)

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)



अन्नालयम



कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



मुख्य संपादक

तमिलनाडु क्षेत्र की राजभाषा गृह पत्रिका “अन्नालयम” के सातवें अंक को आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं आत्मिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल रचनाओं, विचारों और उपलब्धियों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि यह हमारे कार्यालयीन परिवार के बीच निरंतर संवाद, आपसी जुड़ाव तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है।

इस अवसर पर मैं सभी प्रगतिशील लेखकों, जागरूक पाठकों, समर्पित संपादक मंडल तथा सहयोगी सदस्य कार्यालयों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ, जिनके सामूहिक योगदान, सक्रिय सहभागिता एवं निरंतर सहयोग से “अन्नालयम” ज्ञान, सृजनशीलता और राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता का एक सशक्त एवं प्रतिष्ठित मंच बन सकी है। इस सातवें अंक का प्रकाशन हमारे लिए विशेष रूप से गौरव एवं प्रसन्नता का विषय है। प्रत्येक अंक के साथ “अन्नालयम” ने अपनी यात्रा में नए आयाम जोड़े हैं तथा अपने पाठकों के साथ आत्मीय संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ किया है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएँ, संस्मरण, अनुभव, आलेख एवं अन्य रचनाएँ न केवल पाठकों के ज्ञान में अभिवृद्धि एवं उनका मनोरंजन करती हैं, बल्कि उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति अनुराग, रुचि और सम्मान की भावना को भी सुदृढ़ करती हैं। निश्चित रूप से, सभी रचनाकारों एवं सहयोगी सदस्यों का यह सामूहिक प्रयास “अन्नालयम” को निरंतर समृद्ध, जीवंत और प्रेरणादायी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

आइए, हम सभी मिलकर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रगामी प्रयोग के संकल्प को और अधिक सशक्त बनाएं तथा “अन्नालयम” को केवल एक गृह पत्रिका न मानकर अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और सृजनात्मक प्रतिभाओं के साझा मंच के रूप में विकसित करें।

इसी शुभकामना के साथ “अन्नालयम” के सातवें अंक के सफल प्रकाशन पर सभी रचनाकारों, संपादकीय टीम एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आशा है कि आप सभी के निरंतर सहयोग और सहभागिता से “अन्नालयम” की यह साहित्यिक यात्रा आगे भी इसी उत्साह एवं गरिमा के साथ निरंतर गतिमान रहेगी।

क.क.गुप्ता

(कुणाल कुमार गुप्ता)
प्रबंधक (राजभाषा)



अन्नालयम



के आर लोकेश कुमार शाह
सहायक श्रेणी प्रथम (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



संपादक

आपके समक्ष “अन्नालयम” के सातवें अंक को पुनः प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है।

“अन्नालयम” केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि तमिलनाडु क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिरुचियों, प्रतिभाओं, भावनाओं और उपलब्धियों का सजीव प्रतिबिंब है। इस अंक में प्रकाशित लेख, रचनाएँ एवं छायाचित्र न केवल कर्मिकों की साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करते हैं, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी रुचि, प्रतिबद्धता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण को भी प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार की पहल हिंदी के प्रति आत्मीयता विकसित करने के साथ-साथ उसे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अधिक सहजता एवं प्रभावी रूप से अपनाने के लिए भी प्रेरित करती है।

गत वर्ष तमिलनाडु क्षेत्र के लिए राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से अत्यंत उत्साहवर्धक एवं उपलब्धिपूर्ण रहा है। क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै सहित विभिन्न मंडल कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए शील्ड एवं अन्य पुरस्कार प्राप्त किए गए हैं। हिंदीतर क्षेत्र होने के बावजूद इन उपलब्धियों को प्राप्त करना हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की निरंतर मेहनत, समर्पण, उत्साह और राजभाषा के प्रति उनकी गहरी रुचि का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह उपलब्धियाँ निश्चित रूप से हम सभी को भविष्य में और बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।

अंततः “अन्नालयम” के सातवें अंक के सफल प्रकाशन में अपना मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान करने वाले सभी वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही, संपादक मंडल के सभी सदस्यों तथा पत्रिका के लिए अपनी बहुमूल्य रचनाएँ, लेख, कविताएँ, संस्मरण एवं अन्य सामग्री उपलब्ध कराने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का भी हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “अन्नालयम” की यह साहित्यिक एवं रचनात्मक यात्रा भविष्य में भी निरंतर जारी रहेगी और आप सभी का अमूल्य सहयोग एवं योगदान इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा। आपके सहयोग से यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनेगी, बल्कि हमारे क्षेत्र की प्रतिभाओं, उपलब्धियों और सामूहिक सृजनशीलता का सशक्त मंच भी बनेगी।

शक .

(के आर लोकेश कुमार शाह)
सहायक श्रेणी प्रथम (राजभाषा)



अन्नालयम

अनुक्रमणिका

संपादक मण्डल

प्रधान संरक्षक
असीम छाबड़ा
महाप्रबंधक(क्षेत्र)

संरक्षक
अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक(रा.भा.)

सलाहकार
कामता प्रसाद
सहायक महाप्रबंधक
(राजभाषा)

मुख्य संपादक
कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक(राजभाषा)

संपादक
के आर लोकेश
कुमार शाह
सहायक श्रेणी.I(रा.भा.)

कार्यालय पता :
महाप्रबंधक(क्षेत्र)
भारतीय खाद्य निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै
सं.8, मेयर सत्यमूर्ति रोड,
चेटपेट, चेन्नै - 600 031

पत्रिका डिजाइनिंग कार्य :
के आर लोकेश कुमार शाह
सहायक श्रेणी प्रथम(राजभाषा)

पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाओं
के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।
केवल आंतरिक वितरण हेतु।

क्र.सं.	लेखक का नाम	रचना / कलाकृतियाँ / गतिविधियाँ	पृ.सं.
1	वी मोती	थीमिदि महोत्सव : आस्था, तपस्या और सांस्कृतिक विरासत	17-18
2	राम बाबु मीना	गांवों का नवजागरण : विकसित भारत की सशक्त आधारशिला	19-20
3	शरण्या एस	विकसित भारत का स्वप्न	21
4	अरुल पावै एन	भारत @ 2047 : संकल्प से सिद्धि तक का सफर	22-23
5	धाना रूपा एम	हिंदी : जनमन की भाषा	23
6	अखिलेश यादव	जय किसान, जय अन्न रक्षक	24
7	पी श्रीकला	संविधान : लोकतंत्र की आत्मा और राष्ट्र निर्माण का आधार	25-26
8	कुणाल कुमार गुप्ता	हिंदी की विकास यात्रा : घर-आंगन से विश्व मंच तक	27-29
9	सुकिर्ति कुमारी	हिंदी : सुशासन की प्रभावी भाषा	30-32
10	आर सुब्रमनियन	अनेकता में एकता	32
11	के जूलियट	भारतीय खाद्य निगम खेत से घर तक पर्दे की पीछे की कहानी	33
12	वी चंद्रा नाइक	एक प्रबंधक की यात्रा : ट्रकचिट से रियल टाइम व्यवस्था तक	34-36
13	मनीष कुमार यादव	तमिलनाडु के अन्ननूर में उत्तर भारतियों द्वारा क्रिकेट मैच	37-38
14	कुणाल कुमार गुप्ता	भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन : एक सार्थक पहल	39-43
15	आतीरा	कर्म की पूजा	43
16	पंकज सिंह	टिप्पणीकार	44
17	शाश्वत रॉय	भूलती संस्कृति, रूठती मिट्टी : भारतीय कृषि और सेहत को नई जिंदगी देंगे ये पारंपरिक बीज	45-46
18	ईस्थर वेलंतिना	भारत में महिला सुरक्षा : सशक्त : राष्ट्र की आधारशिला	47-49
19	राजदीप चौधरी	तमिलनाडु के प्राकृतिक सौंदर्य	50-51
20	संगीता आर	एक मात्र स्थान सत्य है 'परिवर्तन'	52-54
21	सेत्वमथी प्रभाकर	दहेज	54
22	सुमित कुमार	मैं दफ्तर को चलता हूँ	55
23	के कट्टबोम्मन	समय का महत्व	56
24	सुमित कुमार मिश्रा	पॉलिश किए हुए जूते	57-59
25	बी शांति	मौसमी फल का जोखिम बचाव के उपाय	60-61
26	लोकेश कुमार शाह	वंदे मातरम	61
27	ई हेमा श्वेता	नहीं सी परी	70
28	कलाकृतियाँ		62-66
29	वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना में भाग लेने वाले कार्मिकों की सूची		67-70
30	राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार		71
31	क्षेत्रीय राजभाषा संगोष्ठी की झलकियाँ/ राजभाषायी गतिविधियाँ		72



वी मोती
प्रबंधक(सामान्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



थीमिदि महोत्सव : आस्था, तपस्या और सांस्कृतिक विरासत का अभिन पर्व



तमिलनाडु की समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में थीमिदि महोत्सव एक अत्यंत प्राचीन और विशिष्ट स्थान रखता है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आस्था, आत्मविश्वास, संकल्प और भक्ति की अद्भुत अभिव्यक्ति है। सदियों से चली आ रही यह परंपरा आज भी हजारों श्रद्धालुओं को एक साथ जोड़ती है और भारतीय संस्कृति की विविधता एवं आध्यात्मिक गहराई का परिचय कराती है। दिमिथि उत्सव मुख्य रूप से मारियम्पन मंदिर, द्रौपदी अम्पन मंदिर तथा अन्य देवी मंदिरों में श्रद्धा और उत्साह के

साथ मनाया जाता है। इस पर्व में भक्त अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति, देवी के प्रति कृतज्ञता और आध्यात्मिक समर्पण को व्यक्त करने के लिए विशेष अनुष्ठानों में भाग लेते हैं।

भक्ति और कृतज्ञता का अनोखा प्रतीक

थीमिदि महोत्सव के पीछे भक्तों की गहरी आस्था और विश्वास जुड़ा हुआ है। श्रद्धालु अपने जीवन की विभिन्न मनोकामनाओं जैसे संतान प्राप्ति, उत्तम स्वास्थ्य, आर्थिक परेशानियों से मुक्ति, रोज़गार एवं व्यवसाय में सफलता, परिवार की सुख-समृद्धि और जीवन में उन्नति के लिए देवी-देवताओं से प्रार्थना करते हैं। जब उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, तो वे इसे ईश्वर का आशीर्वाद मानते हुए “नेरथिकडन” (कृतज्ञता स्वरूप किया जाने वाला धार्मिक संकल्प) के रूप में थीमिदि अर्पित करते हैं। अग्नि पर चलने की यह परंपरा भक्तों के लिए केवल एक शारीरिक परीक्षा नहीं होती, बल्कि यह उनके अटूट विश्वास, मानसिक दृढ़ता और आध्यात्मिक समर्पण का प्रतीक मानी जाती है। श्रद्धालु मानते हैं कि इस अनुष्ठान के माध्यम से वे अपने अहंकार, भय और नकारात्मक विचारों को त्यागकर ईश्वर के



अन्नालयम

प्रति पूर्ण समर्पण व्यक्त करते हैं।

अग्नि गंगा को पार करने की परंपरा

थीमिदि उत्सव का सबसे आकर्षक और आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण हिस्सा है - अग्नि कुंड पर चलने की परंपरा। इस अवसर पर मंदिर परिसर में विशेष रूप से अग्नि कुंड तैयार किया जाता है, जिसे श्रद्धालु श्रद्धा से “अग्नि गंगा” के रूप में देखते हैं। त्योहार से पहले भक्त कई दिनों तक उपवास, संयम और आध्यात्मिक साधना का पालन करते हैं। वे मंदिरों में आयोजित पूजा, भजन, जुलूस और यज्ञ जैसे धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। उत्सव के दिन विशेष पूजा-अर्चना के बाद भक्त देवी का स्मरण करते हुए “ओम शक्ति” का जाप करते हैं और अग्नि कुंड को पार करते हैं। यह अनुष्ठान भक्तों के लिए साहस, आत्मनियंत्रण और विश्वास की परीक्षा माना जाता है। उनके लिए यह क्षण ईश्वर के साथ आध्यात्मिक संबंध को और अधिक मजबूत करने वाला अनुभव होता है।

अनुशासन और आत्मबल का पर्व

थीमिदि महोत्सव केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक विकास से भी जुड़ा हुआ है। उपवास, ध्यान, प्रार्थना और आत्मसंयम जैसी गतिविधियां व्यक्ति में अनुशासन और सकारात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं। कई श्रद्धालुओं के लिए यह पर्व आत्मविश्वास बढ़ाने और मानसिक शांति प्राप्त करने का माध्यम बनता है। सामूहिक पूजा और आध्यात्मिक वातावरण लोगों को तनाव से राहत, मन की स्थिरता और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव कराते हैं।

सामाजिक एकता और सांस्कृतिक संरक्षण

थीमिदि महोत्सव समाज को एक सूत्र में बांधने वाली परंपरा भी है। इस अवसर पर विभिन्न समुदायों के हजारों लोग एकत्रित होते हैं, एक-दूसरे की सहायता करते हैं और मिलकर धार्मिक आयोजन

को सफल बनाते हैं। मंदिरों में होने वाले जुलूस, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामूहिक अनुष्ठान लोगों के बीच सहयोग, भाईचारे और सामाजिक सद्भाव को मजबूत करते हैं। यह पर्व तमिल संस्कृति की उस विरासत को जीवित रखता है जिसमें परंपरा, आध्यात्मिकता और सामुदायिक भावना का सुंदर संगम दिखाई देता है। पीढ़ी दर पीढ़ी यह उत्सव लोगों को अपनी संस्कृति और धार्मिक मूल्यों से जोड़ता आ रहा है।

आस्था और आधुनिक दृष्टिकोण का संगम

आज के समय में थीमिदि महोत्सव को केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी देखा जाता है। सामूहिक प्रार्थना, ध्यान, अनुशासन और सकारात्मक विश्वास जैसी गतिविधियां व्यक्ति के आत्मबल और भावनात्मक संतुलन को मजबूत कर सकती हैं। हालांकि अग्नि पर चलने की परंपरा एक गहरी धार्मिक मान्यता और सांस्कृतिक अनुष्ठान है, इसे हमेशा श्रद्धा, परंपरा और सुरक्षित आयोजन के संदर्भ में समझना चाहिए। यह पर्व भक्तों के विश्वास और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है।

थीमिदि महोत्सव तमिलनाडु की एक अनमोल आध्यात्मिक धरोहर है, जिसमें भक्ति, साहस, अनुशासन और सामाजिक एकता का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह उत्सव केवल अग्नि पर चलने की रस्म नहीं, बल्कि मानव मन की दृढ़ता, विश्वास की शक्ति और ईश्वर के प्रति समर्पण की जीवंत अभिव्यक्ति है। सदियों पुरानी यह परंपरा आज भी लोगों को आध्यात्मिक ऊर्जा, सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक सद्भाव का संदेश देती है। थीमिदि महोत्सव इस बात का प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति में आस्था केवल पूजा तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक प्रेरणादायक भावना भी है।



राम बाबु मीना
मंडल प्रबंधक
मंडल कार्यालय, कडलूर



गाँवों का नवजागरण : विकसित भारत की सशक्त आधारशिला



“भारत का भविष्य महानगरों की ऊँची इमारतों में नहीं, बल्कि गाँवों की सशक्त होती चौपालों में लिखा जाएगा।”

भारत सदियों से गाँवों का देश रहा है। हमारी संस्कृति, सभ्यता, लोकजीवन और परंपराओं की जड़ें गाँवों की मिट्टी में ही गहराई तक समाई हुई हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि “भारत की आत्मा उसके

गाँवों में बसती है।” आज, जब देश ‘विकसित भारत 2047’ के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, तब यह स्पष्ट है कि गाँवों के सर्वांगीण विकास के बिना यह स्वप्न कभी साकार नहीं हो सकता। इसलिए आज का सबसे बड़ा राष्ट्रीय दायित्व है गाँवों का नवजागरण।

वर्तमान समय में ग्रामीण भारत एक नए परिवर्तन का साक्षी बन रहा है। जहाँ कभी कच्ची सड़कें, सीमित संसाधन और बुनियादी सुविधाओं का अभाव विकास की राह में बाधा थे, वहीं आज अनेक गाँव आधुनिक तकनीक, डिजिटल सेवाओं और आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। इंटरनेट, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा, टेलीमेडिसिन, सौर ऊर्जा और आधुनिक कृषि तकनीकों ने ग्रामीण जीवन की तस्वीर बदलनी शुरू कर दी है। अब किसान केवल खेत तक सीमित



अन्नालयम

नहीं है, बल्कि मोबाइल फोन के माध्यम से मौसम, मंडी के भाव और नई कृषि तकनीकों की जानकारी भी प्राप्त कर रहा है।

किन्तु गाँवों का विकास केवल तकनीक तक सीमित नहीं होना चाहिए। वास्तविक विकास वह है, जहाँ प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, प्रत्येक परिवार को स्वच्छ पेयजल और स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध हों, युवाओं को अपने ही गाँव में सम्मानजनक रोजगार प्राप्त हो तथा महिलाओं को समान अवसर और आत्मनिर्भरता का अधिकार मिले। ऐसा गाँव ही वास्तव में समृद्ध और विकसित कहलाएगा।

आज भी अनेक गाँव बेरोजगारी, जल संकट, कृषि लागत में वृद्धि, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव जैसी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। इन समस्याओं के कारण बड़ी संख्या में युवा शहरों की ओर पलायन करने के लिए विवश हो जाते हैं। यदि गाँवों में ही उद्योग, कौशल विकास केंद्र, आधुनिक कृषि और लघु उद्यमों को प्रोत्साहन दिया जाए, तो यह पलायन काफी हद तक रुक सकता है। आत्मनिर्भर गाँव ही आत्मनिर्भर भारत की सबसे मजबूत नींव बन सकते हैं।

ग्रामीण विकास केवल सरकार की योजनाओं से संभव नहीं है; इसके लिए जनभागीदारी भी उतनी ही आवश्यक है। स्वच्छता, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, जैविक खेती, महिला स्वयं सहायता समूह, डिजिटल साक्षरता तथा सामाजिक समरसता जैसे प्रयास गाँवों को नई दिशा दे सकते हैं। जब ग्राम पंचायत, प्रशासन और ग्रामीण समाज एक साथ

मिलकर विकास का संकल्प लेते हैं, तब परिवर्तन केवल कागज़ों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि धरातल पर दिखाई देता है।

आज आवश्यकता केवल 'स्मार्ट सिटी' बनाने की नहीं, बल्कि 'स्मार्ट गाँव' विकसित करने की है। जब गाँव शिक्षित होंगे, किसान समृद्ध होंगे, महिलाएँ आत्मनिर्भर होंगी और युवाओं को अपने गाँव में ही सम्मानजनक अवसर मिलेंगे, तभी भारत वास्तविक अर्थों में विकसित राष्ट्र बन सकेगा। अंततः गाँव केवल भौगोलिक इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि भारत की संस्कृति, श्रम, संवेदना और आत्मा के जीवंत प्रतीक हैं। यदि गाँव समृद्ध होंगे, तो भारत समृद्ध होगा; यदि गाँव आत्मनिर्भर होंगे, तो भारत आत्मनिर्भर होगा। आइए, हम सब मिलकर ऐसे भारत के निर्माण का संकल्प लें, जहाँ प्रत्येक गाँव विकास, स्वाभिमान और समृद्धि का पर्याय बने। यही विकसित भारत की सबसे सशक्त आधारशिला है और यही राष्ट्र निर्माण का सबसे प्रभावी मार्ग भी।



प्रेमचंद

सच्चा भारत और उसकी आत्मा महलों में नहीं बल्कि गाँवों की झोपड़ियों और किसानों के खेतों में बसती है!



अन्नालयम



शरण्या एस्
सहायक श्रेणी द्वितीय(सा.)
मंडल कार्यालय, कोयम्बतूर



विकसित भारत का स्वप्न

उगते सूरज की किरणों सा,
नव विश्वास हमारा है।
ज्ञान, कर्म और नवाचारों से,
सजता देश हमारा है।
खेतों में हरियाली महके,
कारखानों में हो सम्मान।
विज्ञानों से सजे योगशाला,
शिक्षा बने नई पहचान।
युवा शक्ति के दृढ़ संकल्पों से,
हर सपना साकार बने।
नव विचारों के उजियारे में,
भारत विश्व का द्वार बने।
सीमा पर सजग प्रहरी खड़े हों,
भीतर श्रम का हो उत्सव।
नारी, किसान, श्रमिक और
शिक्षक,
सबके श्रम का हो अभिनंदन नव।
तकनीक बने जनसेवा का माध्यम,
ज्ञान सभी तक जाए।

हर भाषा का मान बढे और,
हिंदी संवाद निभाए।
न्याय, समानता, सेवा, सद्भाव,
जीवन का आधार बने।
संविधान के उच्च आदर्श,
हर जन का व्यवहार बने।
हर गांव बने अवसर की धरती,
हर शहर गति का द्वार।
कोई पीछे छूटे न पथ में,
यही हो भारत का विस्तार।
आओ मिलकर दीप जलाए,
मेहनत को दें नया सम्मान।
विकसित भारत केवल सपना नहीं,
हम सबका है यह अभियान।
जब श्रम होगा सबसे बड़ी पूजा,
ईमान होगा पहचान।
तब विश्व पटल पर स्वर्णाक्षरों में,
दमकेगा अपना हिंदुस्तान।



अन्नालयम



अरुलपावि एन
प्रबंधक(गुण नियंत्रण)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



भारत @ 2047 : संकल्प से सिद्धि तक का सफर



प्रस्तावना : वर्ष 2047 भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने का ऐतिहासिक अवसर होगा। यह केवल एक वर्ष नहीं, बल्कि विकसित, आत्मनिर्भर और समृद्ध भारत के निर्माण का लक्ष्य है। आज भारत “विकसित भारत 2047” के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने विकास, डिजिटल क्रांति, बुनियादी ढांचे और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत @ 2047 का उद्देश्य ऐसा राष्ट्र बनाना है जो आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी दृष्टि से विश्व के अग्रणी देशों में शामिल हो।

विकसित भारत का संकल्प : विकसित भारत का सपना केवल सरकार का नहीं, बल्कि प्रत्येक भारतीय का सपना है। इसका उद्देश्य गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा को कम करके सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करना है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और उद्योग के क्षेत्रों में निरंतर सुधार के माध्यम से देश विकास की नई ऊँचाइयों को छू रहा है।

आर्थिक और तकनीकी की प्रगति : आज भारत विश्व की प्रमुख अर्थप्रबंधनों में से एक बन चुका है। ‘डिजिटल इण्डिया’, ‘मेक इन इण्डिया’, ‘स्टार्टअप इण्डिया’ और ‘आत्मनिर्भर भारत’ जैसी पहलें देश को नई दिशा प्रदान कर रही हैं। डिजिटल भुगतान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) अंतरिक्ष अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में भारत ने विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। लक्ष्य है कि 2047 तक भारत दुनिया की अग्रणी आर्थिक शक्तियों में शामिल हो जाए। भविष्य की ओर देखते हुए, देश 2047 तक 30 ट्रिलियन अमेरिकी डालर की जी.डी.पी. और 18000 अमेरिकी



अन्नालयम

डालर की अनुमानित प्रति व्यक्ति के लक्ष्य है।

ऊर्जा और पर्यावरण : भारत स्वच्छ और हरित ऊर्जा पर जोर दे रहा है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन जैसी योजनाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है। इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे वायु प्रदूषण कम हो और देश ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर बन सके।

गांव और शहरों का विकास : विकास की इस लहर में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत लोगों को पक्के घर दिए जा रहे हैं। जल जीवन मिशन के माध्यम से हर घर तक स्वच्छ पानी पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। शहरों में स्मार्ट सिटी मिशन के तहत बेहतर सड़कें, डिजिटल सुविधाएँ, मेट्रो ट्रेन और स्वच्छ वातावरण विकसित किया जा रहा है।

विश्व में भारत का भूमिका : भारत आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। युवा जनसंख्या, नई तकनीक और बढ़ते उद्योग भारत को वैश्विक स्तर पर मजबूत बना रहे हैं। आने वाले वर्षों में भारत व्यापार, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

निष्कर्ष : भारत @ 2047 केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों का सामूहिक संकल्प है। सरकार की योजनाओं और नागरिकों के सहयोग से यह लक्ष्य अवश्य प्राप्त किया जा सकता है।

“सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास” के माध्यम से भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनेगा।



धाना रूपा

सहायक श्रेणी तृतीय(तक.)
मंडल कार्यालय, कोयंबटूर

हिंदी

जन मन की भाषा

हिंदी केवल शब्द नहीं है,

भावों का विस्तार है।

जन-जन के विश्वास की भाषा,

भारत का शृंगार है।

सरल बने जब हर संवाद,

सहज बने हर काम।

हिंदी से ही जुड़ा रहता,

दिल से दिल का धाम।

तकनीक संग बढ़ती हिंदी,

लेती नए आयाम।

राजभाषा बनकर करती,

राष्ट्रहित का काम।



अन्नालयम



अरिंदेश सिंह यादव
सहायक श्रेणी प्रथम(डिपो)
मंडल कार्यालय, चेन्नै



जय किसान जय अन्न रक्षक भारतीय खाद्य निगम

किसान खेत में मेहनत करते हैं
पसीना बहाकर अन्न को उगाते हैं
धूप में तपकर, बारिश में बीगकर,
सोने जैसी फसल पकड़े है
पर किसान के बाद अन्न का जिम्मा हम उठाते हैं
अनाज को गोदाम में हम ही पालते हैं
बोरी-बोरी में भरकर, साफ-सुथरा रखते हैं
कीड़ों और नमी से हम ही बचाते हैं
गल्ला, तोल इन सबका हिसाब हम रखते हैं
एक-एक दानों का मान हम बढ़ाते हैं
बारिश आये या आंधी आये
गोदाम में चिराग हम ही जलाते हैं
किसान है अन्न दाता यह सच सब मानते हैं
पर हम भी अन्न के रक्षक यह कम ही जानते हैं
अन्न को खेतों से थाली तक का सफर, हम कराते हैं
हम भारतीय खाद्य निगम के काम करते हैं
किसान के बाद अन्न को हम पालते हैं।



पी श्रीकला
प्रबंधक(राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कोयंबतूर



संविधान : लोकतंत्र की आत्मा और राष्ट्र निर्माण का आधार

“हम भारत के लोग...” ये चार शब्द केवल संविधान की प्रस्तावना का आरंभ नहीं हैं, बल्कि भारत के लोकतांत्रिक चरित्र, राष्ट्रीय एकता और जनसत्ता की सर्वोच्चता की उद्घोषणा भी हैं।

भारतीय संविधान हमें यह स्मरण कराता है कि राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी जनता में निहित है और शासन का प्रत्येक अंग जनता के प्रति उत्तरदायी है। इसी भावना को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिवर्ष नवंबर को संविधान दिवस मनाया जाता है। यह दिन केवल संविधान के अंगीकरण का स्मृति-दिवस नहीं, बल्कि संवैधानिक मूल्यों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को पुनः पुष्ट करने का अवसर भी है।

भारतीय संविधान विश्व के सबसे विस्तृत और सुविचारित संविधानों में से एक है। इसे विभिन्न ऐतिहासिक अनुभवों, लोकतांत्रिक परंपराओं और भारतीय समाज की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया। संविधान सभा के सदस्यों ने लगभग तीन वर्षों तक गहन विचार-विमर्श, विमर्श और संशोधनों के पश्चात एक ऐसा संविधान तैयार किया, जो न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे सार्वभौमिक आदर्शों को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप स्थापित करता है। 21 नवंबर, 1949 को संविधान को अंगीकृत किया गया और 26 जनवरी 1950 से यह प्रभावी हुआ। तभी से भारत एक संपूर्ण



लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में विश्व के समक्ष स्थापित हुआ।

संविधान केवल शासन संचालन का विधिक दस्तावेज नहीं है; यह राष्ट्र के आदर्शों, आकांक्षाओं और भविष्य की दिशा का मार्गदर्शक भी है। इसकी प्रस्तावना प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय; विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता; अवसर की समानता तथा व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता सुनिश्चित करने का संकल्प प्रदान करती है। यही मूल्य भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला हैं।

संविधान की सबसे बड़ी विशेषता इसकी समावेशी दृष्टि है। भारत अनेक भाषाओं, संस्कृतियों, परंपराओं और सामाजिक विविधताओं वाला देश है। संविधान ने इस विविधता को हमारी सामूहिक शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्रदान



अन्नालयम

करते हुए यह सभी भाषाओं, संस्कृतियों और समुदायों के सम्मान की भावना को भी सुदृढ़ करता है। यही कारण है कि भारतीय लोकतंत्र निरंतर विकसित और सशक्त होता रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रश्न भी संविधान की इसी व्यापक दृष्टि से जुड़ा हुआ है। संविधान के अनुच्छेद में हिंदी (देवनागरी लिपि) को संघ की राजभाषा का स्थान प्रदान किया गया। इसका उद्देश्य प्रशासन को अधिक सरल, प्रभावी और जनसुलभ बनाना था। साथ ही संविधान ने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन की भावना को भी समान महत्व दिया। इस प्रकार राजभाषा नीति किसी भाषा की श्रेष्ठता का नहीं, बल्कि प्रशासन और नागरिकों के बीच सहज संवाद स्थापित करने का माध्यम है।

सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों तथा विश्वविद्यालयों में संविधान की भावना तभी साकार होती है जब प्रशासन पारदर्शी, उत्तरदायी और नागरिक-केंद्रित हो। सुशासन केवल नियमों के पालन से नहीं आता; वह संवैधानिक मूल्यों को व्यवहार में उतारने से विकसित होता है। समयबद्ध सेवा, निष्पक्ष निर्णय, पारदर्शी प्रक्रियाएँ, भ्रष्टाचार-मुक्त कार्य प्रणाली और नागरिकों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार - ये सभी संविधान की मूल भावना के ही व्यावहारिक रूप हैं।

डिजिटल युग ने संविधान की भावना को जन-जन तक पहुँचाने के नए अवसर प्रदान किए हैं। ई-गवर्नेंस, डिजिटल सेवाएँ, ऑनलाइन शिकायत निवारण, सूचना का अधिकार, डिजिटल भुगतान तथा नागरिक सेवा पोर्टलों ने प्रशासन को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाया है। यदि ये सेवाएँ सरल और सहज भाषा में उपलब्ध हों, तो नागरिकों की सहभागिता और विश्वास दोनों में वृद्धि होती है। इस दृष्टि से राजभाषा हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का उपयोग लोकतंत्र को अधिक सहभागी और समावेशी बनाता है।

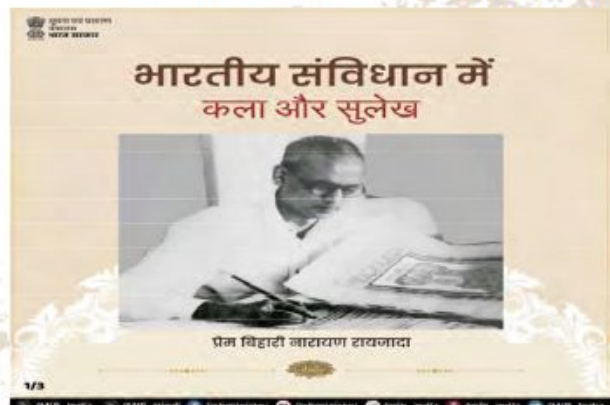
संविधान नागरिकों को केवल अधिकार ही नहीं देता, बल्कि कर्तव्यों का भी बोध कराता है। मौलिक कर्तव्य हमें राष्ट्र की एकता, अखंडता, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करते

हैं। एक जागरूक नागरिक वही है जो अपने अधिकारों के साथ अपने दायित्वों का भी समान रूप से पालन करें। संविधान दिवस हमें इसी संतुलित दृष्टिकोण का संदेश देता है।

आज जब भारत विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, तब संविधान के मूल आदर्श और भी प्रासंगिक हो उठते हैं। आर्थिक प्रगति, तकनीकी नवाचार, सामाजिक न्याय और सुशासन इन सभी का स्थायी आधार संविधान ही है। कोई भी संस्था, चाहे वह सरकारी कार्यालय हो, बैंक हो, सार्वजनिक उपक्रम हो या विश्वविद्यालय, तभी उत्कृष्ट कार्य संस्कृति विकसित कर सकती है जब उसके कार्यों में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, समान अवसर और नैतिकता का समावेश हो।

संविधान दिवस केवल औपचारिक आयोजन का अवसर नहीं है। यह आत्ममंथन का भी दिवस है क्या हम अपने कार्यस्थल पर संविधान की भावना के अनुरूप कार्य कर रहे हैं? क्या हमारे निर्णय निष्पक्ष और पारदर्शी हैं? क्या हम नागरिकों और सहकर्मियों के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करते हैं? क्या हम भाषा, क्षेत्र, धर्म या अन्य किसी आधार पर भेदभाव से ऊपर उठकर कार्य करते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर ही संविधान के प्रति हमारी वास्तविक प्रतिबद्धता को परिभाषित करते हैं।

इस विशेषांक का उद्देश्य संविधान के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के साथ-साथ उसके मूल्यों को दैनिक जीवन और कार्यालयीन संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने की प्रेरणा देना है। यदि प्रत्येक कर्मचारी, अधिकारी और नागरिक अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करें तथा संविधान में निहित न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के आदर्शों को व्यवहार में उतारे, तो हमारा लोकतंत्र और अधिक सशक्त होगा।





कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



हिंदी की विकास यात्रा : घर-आंगन से विश्व मंच तक

हिंदी भारत की प्रमुख और व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं और भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है। हिंदी ने सदियों से भारतीय समाज को जोड़ने और विविधता में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मातृभाषा के रूप में हिंदी करोड़ों लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। इसकी सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता ने इसे देश की संपर्क भाषा बनाया है। हिंदी साहित्य, सिनेमा, संगीत, मीडिया और डिजिटल माध्यमों के कारण आज यह विश्व के अनेक देशों में अपनी पहचान बना रही है। विदेशों में बसे भारतीय समुदायों ने हिंदी को अपनी संस्कृति और पहचान से जोड़े रखा है। आधुनिक तकनीक और इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव से हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। अपनी समृद्ध साहित्यिक परंपरा और वैश्विक लोकप्रियता के कारण हिंदी भविष्य में विश्व की प्रमुख भाषाओं में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है।

हिंदी का जन्म और विकास

हिंदी भाषा का विकास एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। हिंदी की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई, जो भारतीय संस्कृति और ज्ञान की प्राचीन भाषा रही है। संस्कृत से प्राप्त और फिर अपभ्रंश भाषाओं के विकास के क्रम में हिंदी का स्वरूप धीरे-धीरे विकसित हुआ। समय के साथ हिंदी ने विभिन्न क्षेत्रों की बोलियों और लोकभाषाओं को अपनाकर अपना समृद्ध रूप प्राप्त किया। मध्यकाल में हिंदी भाषा का साहित्यिक विकास तेजी से हुआ। इस काल में हिंदी ने भक्ति, प्रेम और सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में विशेष स्थान प्राप्त किया। सूरदास कबीर, तुलसीदास जैसे कवियों हिंदी को जनसामान्य की भाषा बनाया और इसे समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाया।

हिंदी : भारत की मातृभाषा और संपर्क भाषा

हिंदी भारत के अनेक राज्यों में लोगों की मातृभाषा है। यह विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के लोगों को जोड़ने वाली संपर्क भाषा के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी ने देश की विविध

अन्नालयम

संस्कृतियों और परंपराओं के बीच आपसी समझ, एकता और भाईचारे को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी ने लोगों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नेताओं और समाज सुधारकों ने हिंदी को जनजागरण, राष्ट्रभक्ति और स्वतंत्रता की भावना को फैलाने का सशक्त माध्यम बनाया। हिंदी ने देशवासियों को एक सूत्र में बाँधकर स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूती प्रदान की।

हिंदी का साहित्यिक वैभव

हिंदी साहित्य कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबंध जैसी विविध विधाओं से समृद्ध है। प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद और रामधारी सिंह दिनकर जैसे महान साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी को समृद्ध बनाया और विश्व साहित्य में इसे विशेष पहचान दिलाई।

आधुनिक युग में हिंदी का विस्तार

आधुनिक समय में हिंदी का प्रयोग केवल बोलचाल और साहित्य तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, पत्रकारिता और इंटरनेट जैसे अनेक क्षेत्रों में भी तेजी से बढ़ रहा है। नई तकनीकों के विकास के साथ हिंदी ने स्वयं को समय के अनुसार ढाला है और डिजिटल दुनिया में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है।

विश्व मंच पर हिंदी

आज हिंदी भारत की सीमाओं से बाहर भी अपनी पहचान बना रही है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, नेपाल, अमेरिका, कनाडा सहित कई देशों में हिंदी बोलने और समझने वाले लोग रहते हैं। विदेशों में बसे भारतीय समुदायों ने हिंदी को

अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़े रखा है। हिंदी फिल्मों, गीतों, साहित्य और डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके माध्यम से हिंदी आज एक वैश्विक भाषा के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर रही है।

हिंदी के सामने चुनौतियाँ

विश्व भाषा बनने की यात्रा में हिंदी ने अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, लेकिन इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषा का प्रभाव शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक होने के कारण हिंदी के प्रयोग को कई क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में हिंदी की सामग्री तथा संसाधनों की अभी और आवश्यकता है, ताकि हिंदी का उपयोग आधुनिक ज्ञान और शोध के क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से किया जा सके। इसके अलावा कुछ क्षेत्रों में हिंदी के प्रति जागरूकता और व्यवहारिक उपयोग को बढ़ाने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए हिंदी के प्रचार-प्रसार, गुणवत्तापूर्ण हिंदी सामग्री के निर्माण, तकनीकी विकास में हिंदी के प्रयोग और भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना आवश्यक है। निरंतर प्रयासों से हिंदी को विश्व स्तर पर और अधिक प्रभावशाली स्थान प्राप्त हो सकता है।

हिंदी का भविष्य

हिंदी का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल दिखाई दे रहा है। आधुनिक समय में नई तकनीकों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल माध्यमों और अनुवाद सेवाओं के विकास ने हिंदी के विस्तार के नए अवसर प्रदान किए हैं। अब हिंदी में ज्ञान, शिक्षा, विज्ञान और तकनीक से जुड़ी सामग्री आसानी से उपलब्ध हो रही है, जिससे इसका उपयोग लगातार बढ़



अन्नालयम

रहा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से हिंदी विश्व के विभिन्न देशों तक पहुँच रही है। डिजिटल सामग्री, मोबाइल एप्लीकेशन और आधुनिक तकनीकी साधनों ने हिंदी को अधिक सरल, उपयोगी और प्रभावी बना दिया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आधुनिक अनुवाद तकनीकों के कारण हिंदी और अन्य भाषाओं के बीच संवाद आसान हो रहा है। इससे हिंदी सीखने और समझने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ रही है। अपनी समृद्ध साहित्यिक परंपरा, सरल अभिव्यक्ति और तकनीकी क्षेत्र में बढ़ते प्रयोग के कारण हिंदी आने वाले समय में विश्व की प्रमुख भाषाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखने की क्षमता रखती है।

घर-आँगन की भाषा से विश्व भाषा तक हिंदी की यात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है। अपनी सरलता, सहजता, समृद्ध साहित्यिक परंपरा और व्यापक उपयोगिता के कारण हिंदी आज विश्व स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना रही है। यह केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी लोगों को जोड़ने और भारतीय संस्कृति से परिचित कराने का महत्वपूर्ण माध्यम बन रही है। हिंदी भाषा में भारतीय सभ्यता, परंपराओं, विचारों और भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति होती है। यह विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के लोगों के बीच संपर्क और एकता स्थापित करने का कार्य करती है। साहित्य, सिनेमा, संगीत, तकनीक और डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव से हिंदी का वैश्विक प्रसार निरंतर हो रहा है। हिंदी केवल शब्दों का माध्यम नहीं, बल्कि भारत की संस्कृति, संवेदनाओं और मूल्यों की पहचान है। आने वाले समय में निरंतर प्रयासों और आधुनिक तकनीक के सहयोग से हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में अपना सम्मानजनक स्थान और अधिक मजबूत करेगी।

हिंदी नवजागरण के अग्रदूत



भारतेंदु हरिश्चंद्र

(9 सितंबर 1850 - 6 जनवरी 1885)

- आधुनिक हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के प्रमुख प्रवर्तक थे।
- 'अंधेर नगरी', 'भारत-दुर्दशा' और 'नील देवी' प्रमुख रचनाएँ हैं।
- 'कविवचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन' के माध्यम से पत्रकारिता को नई दिशा दी।
- साहित्य में सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया।
- 1880 में हिंदी विद्वानों ने उन्हें 'भारतेंदु' की उपाधि प्रदान की।

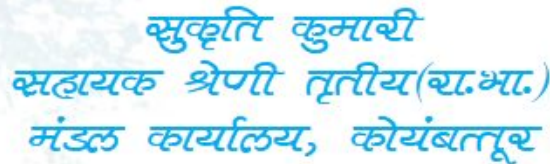
राष्ट्रकवि एवं आधुनिक हिंदी काव्य के महान ध्वजवाहक

मैथिलीशरण गुप्त

(3 अगस्त 1886 - 12 दिसंबर 1964)

- 'भारत-भारती' (1912) के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को सशक्त किया और 'राष्ट्रकवि' के रूप में व्यापक ख्याति प्राप्त की।
- छोटी बोली हिंदी को काव्य-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित और लोकप्रिय बनाने वाले पुनर्गठक साहित्यकार थे।
- प्रसिद्ध महाकाव्य 'साकेत' के लिए प्रीतिष्ठ 'मंगलाग्रसद' पारितोषिक से सम्मानित हुए।
- 'साकेत' और 'यशोधरा' जैसी कालजयी रचनाओं में उपस्थित नारी-पात्रों को साहित्य में केंद्रीय स्थान प्रदान किया।
- स्वतंत्र भारत में वर्ष 1952 से 1964 तक राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे।
- साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान के लिए वर्ष 1954 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया।
- प्रमुख रचनाएँ: साकेत, भारत-भारती, यशोधरा, द्वापर, जयदध वध, चण्वटी, रंग में भंग...





राजभाषा हिंदी का उद्देश्य किसी अन्य भारतीय भाषा का स्थान लेना नहीं है। भारत की भाषाई विविधता हमारी सांस्कृतिक शक्ति है और प्रत्येक भाषा का अपना महत्व है। हिंदी का दायित्व संघ के प्रशासन में एक ऐसी संपर्क भाषा के रूप में कार्य करना है, जो विभिन्न भाषाई क्षेत्रों के बीच समन्वय स्थापित कर सके। इसी भावना के साथ संविधान ने हिंदी को संघ की राजभाषा का स्थान प्रदान किया और



अन्नालयम

साथ ही भारतीय भाषाओं के सम्मान तथा संरक्षण की व्यवस्था भी सुनिश्चित की।

वर्तमान समय में शासन-प्रशासन तेजी से डिजिटल स्वरूप ग्रहण कर रहा है। ई-ऑफिस, ई-फाइल, ऑनलाइन सेवाएँ, डिजिटल भुगतान, मोबाइल अनुप्रयोग तथा नागरिक सेवा पोर्टलों ने प्रशासन को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाया है।

इस परिवर्तन में हिंदी की भूमिका निरंतर सशक्त हुई है। यूनिकोड, हिंदी टाइपिंग उपकरण, वाक्-पहचान तकनीक, मशीन अनुवाद तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा उपकरणों ने हिंदी में कार्य करना पहले की तुलना में कहीं अधिक सरल और सुविधाजनक बना दिया है। आज सरकारी कर्मचारी बिना किसी विशेष तकनीकी कठिनाई के हिंदी में नोटशीट, पत्राचार, प्रतिवेदन और अन्य प्रशासनिक दस्तावेज तैयार कर सकते हैं।

सुशासन का एक महत्वपूर्ण पक्ष नागरिकों की सक्रिय भागीदारी भी है। जब सरकारी योजनाओं, कल्याणकारी कार्यक्रमों और जनहितकारी अभियानों की जानकारी सरल हिंदी में उपलब्ध होती है, तब समाज के व्यापक वर्ग तक उसका प्रभावी प्रसार संभव होता है। भाषा की सरलता नागरिकों में विश्वास उत्पन्न करती है और उन्हें शासन की प्रक्रियाओं में सहभागी बनने के लिए प्रेरित करती है। यही लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति है।

बैंकिंग, बीमा, रेलवे, सार्वजनिक उपक्रम, विश्वविद्यालय और अन्य सरकारी संस्थानों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग इस परिवर्तन का सशक्त उदाहरण है। ग्राहक सेवा, शिकायत निवारण, डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन आवेदन और सूचना प्रसार जैसे क्षेत्रों में हिंदी के उपयोग ने सेवाओं को अधिक जनोन्मुख बनाया है।

जब कोई नागरिक अपनी सुविधा की भाषा में जानकारी प्राप्त करता है, तो सेवा की गुणवत्ता और संतुष्टि दोनों में वृद्धि होती है।

राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए केवल नियम पर्याप्त नहीं हैं; आवश्यक है सकारात्मक कार्य-संस्कृति। यदि अधिकारी और कर्मचारी हिंदी को अतिरिक्त दायित्व के रूप में नहीं, बल्कि कार्य को सरल और प्रभावी बनाने के माध्यम के रूप में अपनाएँ, तो राजभाषा नीति के उद्देश्य स्वतः ही सफल होंगे। नियमित हिंदी कार्यशालाएँ, व्यावहारिक प्रशिक्षण, सरल प्रशासनिक शब्दावली का उपयोग तथा तकनीकी संसाधनों का प्रभावी प्रयोग इस दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी के सामने नई संभावनाएँ भी हैं।

दस्तावेजों का त्वरित अनुवाद, वॉइस-आधारित सेवाएँ, स्मार्ट चौटबॉट, स्वचालित सार-संक्षेप तथा डिजिटल ज्ञान-संसाधन हिंदी को प्रशासनिक कार्यों में और अधिक सक्षम बना रहे हैं। भविष्य का प्रशासन बहुभाषी, तकनीक-सक्षम और नागरिक-केंद्रित होगा, जिसमें हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होगी।

यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि राजभाषा का प्रभावी प्रयोग केवल सरकारी दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक कर्मचारी और अधिकारी की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का भी हिस्सा है। सरल, स्पष्ट और शुद्ध हिंदी में कार्य करना न केवल राजभाषा नीति के अनुरूप है, बल्कि यह प्रशासनिक दक्षता, समयबद्धता और पारदर्शिता को भी सुदृढ़ करता है। जब भाषा सरल होती है,



अन्नालयम

तो निर्णयों की समझ बेहतर होती है, संवाद अधिक प्रभावी बनता है और कार्य निष्पादन में अनावश्यक भ्रम की संभावना कम हो जाती है।

हिंदी का वास्तविक उद्देश्य भाषा के माध्यम से लोगों को जोड़ना है, न कि विभाजित करना। इसलिए राजभाषा का सफल क्रियान्वयन भारतीय भाषाओं के सम्मान, सहयोग और समन्वय की भावना के साथ ही संभव है। बहुभाषी भारत में हिंदी एक सेतु के रूप में कार्य करती है, जबकि सभी भारतीय भाषाएँ हमारी साझा सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम हिंदी को केवल औपचारिकता या वार्षिक आयोजनों तक सीमित न रखें, बल्कि उसे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य, प्रशासनिक संवाद और जनसेवा का स्वाभाविक माध्यम बनाएँ। यही दृष्टिकोण सुशासन को अधिक प्रभावी, पारदर्शी, उत्तरदायी और नागरिक-केंद्रित बनाने में सहायक होगा।

अंततः हिंदी सुशासन की केवल एक भाषा नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम है। जब प्रशासन नागरिकों की समझ की भाषा में कार्य करता है, तब शासन अधिक संवेदनशील, अधिक सहभागी और अधिक विश्वसनीय बनता है। यही राजभाषा हिंदी का वास्तविक उद्देश्य है और यही विकसित, समावेशी तथा सशक्त भारत की दिशा में हमारा साझा संकल्प भी।



हिंदी की उन्नति का अर्थ, उसके बोलने और समझने वालों की उन्नति है।

द्वारा प्रसाद हिंदी



आर सुब्रमनियन
सहायक श्रेणी द्वितीय(डिपो)
मंडल कार्यालय, कडलूर

अनेकता में एकता

हिमालय की ऊँचाई से सागर की गहराई तक,
भारत की पहचान है हर रंग की परछाई तक।
भाषाएँ अनेक हैं, पर भाव एक-सा रहता है,
हर दिल में अपना देश बसता और बहता है।
कहीं गूँजती है आरती, कहीं अज्ञान की धुन,
कहीं गुरुबानी की शांति,
कहीं चर्चों का सुरूरा।

गहरे भले अलग हों, मजिल तो एक ही है,
हर दिल में बसा हुआ अपना भारत लोक है।
होली के रंगों से दीपावली की रोशनी तक,
ईद की मिठास से बैसाखी की हँसी तक,
हर त्योहार सिखाता है मिलकर रहना हमें,
प्यार की डोर में हर दिल को बाँधना हमें।
नृत्य, संगीत, वेशभूषा - सबमें है विविधता,
फिर भी दिलों में बसी है गहरी एकता।
संकट जब भी आया, साथ खड़े रहे हम सब,
वही है हमारी ताकत, वही है असली रब।
अनेकता में एकता का वह प्यारा संदेश
दुनिया को दिखाता है भारत का परिवेश।
हम सब मिलकर इसे आगे बढ़ाएँगे,
एकता के दीप से हर दिल को जगगाएँगे।



अन्नालयम



के जूलियट
सहायक श्रेणी प्रथम (तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



भारतीय खाद्य निगम खेत से घर तक पर्दे की पीछे की कहानी

किसान अन्न उगाते हैं,
कठिन परिश्रम करते हैं।
फसल की करते हैं कटाई,
भा.खा.नि. तक पहुँचाते हैं कमाई।
उपज की होती है खरीद,
न्यूनतम समर्थन मूल्य के साथ।
विभिन्न खाद्य भंडारण केंद्रों में,
वैज्ञानिक ढंग से होता भंडारण।
खाद्यान्न का संरक्षण होता,
नमी और वेंटिलेशन का ध्यान रखकर।
गुणवत्ता की होती जाँच,
कीट नियंत्रण हेतु धूम्रिकरण साथ।
अधिकता वाले क्षेत्रों से खाद्यान्न,
कमी वाले क्षेत्रों तक पहुँचाया जाता है।
सड़क, रेल और जलमार्ग से,
सफलतापूर्वक परिवहन किया जाता है।
खाद्यान्न का होता आवंटन,

विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत वितरण।
उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से,
लाभार्थियों तक पहुँचता है राशन।
इसीलिए भारतीय खाद्य निगम,
राष्ट्र को निरंतर पोषण देता है।
देशभर में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर,
हर नागरिक की आवश्यकताएँ पूरी करता है।

“देश की खाद्य सुरक्षा में योगदान,
साथ ही पोषण सुरक्षा का निर्माण।”

आज़ादी से अन्न सुरक्षा तक

पहली कहानी

देश की खाद्य सुरक्षा किसानों के समर्पण और परिश्रम से संभव होती है।

भारतीय खाद्य निगम (FCI) द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर की जाने वाली खरीद किसानों के हितों को संरक्षण प्रदान करते हुए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा तंत्र को निरंतर सुदृढ़ बनाती है।

हर खेत, खाद्य सुरक्षा की मजबूत नींव।





अन्नालयम



वी चंद्रा नाइडू
प्रबंधक(डिपो)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



एक प्रबंधक की यात्रा : ट्रक चिट से रियल-टाइम व्यवस्था तक

मैंने भारतीय खाद्य निगम में उस दौर में सेवा शुरू की, जब मैनुअल ट्रक चिट का चलन था। आज मैं डिपो दर्पण और अन्न दर्पण के दौर में कार्य कर रहा हूँ। लगभग तीन दशकों के अपने सेवाकाल में मैंने भा.खा.नि. को हस्तलिखित रजिस्ट्रों और यांत्रिक धर्मकांटों से आगे बढ़कर एकीकृत डिजिटल प्रणालियों, रियल-टाइम निगरानी और पूर्ण पारदर्शिता की व्यवस्था में बदलते हुए देखा है। कई मायनों में, मैं स्वयं को एफ.सी.आई की दो पीढ़ियों के बीच एक सेतु मानता हूँ। एक वह पीढ़ी, जिसने कलम, कागज और कार्बन कहपियों के साथ काम किया, और दूसरी वह पीढ़ी, जो लैपटॉप, डैशबोर्ड और रियल-टाइम डेटा के साथ कार्य कर रही है।

1997 - करीमनगर : मैनुअल व्यवस्था का दौर

जब मैंने 1997 में करीमनगर में तृतीय श्रेणी सहायक (डिपो) के रूप में कार्यभार संभाला, तब मैं हैदराबाद विश्वविद्यालय में एम.फिल. का शोधार्थी था। कंप्यूटर आधारित कार्य की उम्मीद थी, लेकिन सामने पूरी तरह मैनुअल व्यवस्था थी। ट्रक चिट, स्टैक कार्ड और गेट पास हाथ से लिखे जाते थे तथा स्टैक का रिकार्ड कार्बन कापी से तीन प्रतियों में तैयार होता था। यहां तक कि वेइब्रिज भी यांत्रिक था और

वजन पेंसिल से कागज पर दर्ज किया जाता था। उस समय मैंने एक सरल सिद्धांत अपनाया था, “वेटमेंट स्लिप नहीं, तो अनलोडिंग नहीं।” यह दौर मुझे सिखाता है कि किसी भी व्यवस्था की विश्वसनीयता केवल तकनीक पर नहीं, बल्कि ईमानदारी, सतर्कता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर निर्भर करती है।

2000 - करीमनगर : द्वितीय श्रेणी सहायक(डिपो)

वर्ष 2000 में जब मैंने करीमनगर में द्वितीय श्रेणी सहायक(डिपो) के रूप में कार्यभार संभाला, उस समय कार्य का वातावरण मुख्यतः मैनुअल था। कार्य में शुद्धता सावधानीपूर्वक दस्तावेजीकरण, भौतिक सत्यापन और संचालन से जुड़े प्रत्येक अधिकारी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर निर्भर करती थी। मेरे सेवाकाल के शुरूआती वर्षों ने मुझे एक ऐसी सीख दी, जो आज तक मेरे साथ रही है, तकनीक किसी व्यवस्था को बेहतर बना सकती है, लेकिन जवाबदेही उस व्यक्ति से शुरू होती है, जो उस व्यवस्था को संचालित करता है।

2003-2009 - सनतनगर : अर्ध-मैनुअल दौर

वर्ष 2003 में सनतनगर स्थानांतरण के समय भा.खा.नि. में तकनीक का प्रवेश शुरू हो चुका था। हमें पहला इलेक्ट्रॉनिक वेइब्रिज और पूरे



अन्नालयम

डिपो के लिए केवल एक विन्डोस 98 कंप्यूटर मिला। दैनिक आवक ऐक्सेल में दर्ज होने लगी, लेकिन गेट पास और अधिकांश रिकार्ड अभी भी हाथ से तैयार होते थे। सुरक्षा भी मैनुअल थी, लाठी और टार्च लिए चौकीदार ही डिपो की निगरानी करता था और सी.सी.टी.वी. की कोई व्यवस्था नहीं थी। यह वह दौर था जब तकनीक ने दस्तक दे दी थी, लेकिन कार्यप्रणाली अभी भी पारंपरिक थी।

2009-2013 – नलगोंडा : परिवर्तन का दौर

नलगोंडा में प्रथम श्रेणी सहायक (डिपो) के रूप में कार्यभार संभालने के दौरान वेट एंड मेजरमेंट सॉफ्टवेयर लागू हुआ और हाथ से लिखी जाने वाली वजन पर्चियों की जगह कम्प्यूटरीकृत वेइमेंट स्लिप्स ने ले लीं। इससे वजन प्रक्रिया अधिक विश्वसनीय, पारदर्शी और व्यवस्थित हुई। हालांकि श्रमिक प्रबंधन, मिलर संचालन, रेक डिस्पैच, डिमरेज नियंत्रण, भंडारण हानि और निरीक्षण जैसे कार्य अभी भी काफी हद तक मैनुअल और मानवीय निगरानी पर निर्भर थे। यह वह दौर था जब तकनीक एक महत्वपूर्ण उपकरण बन रही थी, लेकिन मानवीय जिम्मेदारी और निगरानी अभी भी अपरिहार्य थी।

2013-2019 – क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद : सतर्कता के माध्यम से तकनीक को समझना

वर्ष 2013 से 2019 तक क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद में रीजनल विजिलेंस स्क्वाड में प्रबंधक के रूप में कार्य करते हुए मैंने तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का व्यापक दौरा किया। इससे मुझे एफ.सी.आई के विभिन्न डिपो को नजदीक से देखने और पुरानी मैनुअल व्यवस्थाओं तथा उभरती हुई डिजिटल प्रणालियों के बीच के अंतर को समझने का अवसर मिला। सतर्कता के कार्य ने मुझे एक बहुत महत्वपूर्ण बात सिखाई, डिजिटलीकरण का अर्थ केवल रजिस्ट्रों की जगह कंप्यूटर लगा देना नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य ऐसी प्रणालियाँ तैयार करना है, जिनमें विसंगतियों को छिपाना कठिन हो

जाए। जब वजन की प्रक्रिया इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली से एकीकृत हो जाती है, तो किसी वाहन को आवश्यक प्रक्रिया पूरी किए बिना आसानी से बाहर जाने देना संभव नहीं रहता। जब स्टॉक से संबंधित लेन-देन डिजिटल रूप से दर्ज होते हैं, तो अस्पष्ट कमी और अनियमितताओं का पता लगाना अधिक आसान हो जाता है। इस प्रकार, तकनीक केवल सुविधा का माध्यम नहीं रह गई थी, बल्कि वह पारदर्शिता, जवाबदेही और गवर्न की रोकथाम का एक महत्वपूर्ण साधन बनती जा रही थी।

2019-2022 – मिर्यालगुडा : कोरोना और डिजिटल परिवर्तन

वर्ष 2019-2022 का मिर्यालगुडा कार्यकाल मेरे सेवाकाल का एक चुनौतीपूर्ण और महत्वपूर्ण दौर रहा। इसी दौरान कोविड-19 महामारी के बीच भा.खा.नि. तेजी से डिजिटल परिवर्तन की ओर बढ़ रहा था। सी.सी.टी.वी., कंट्रोल रूम और रियल-टाइम मॉनिटरिंग ने डिपो की सुरक्षा और निगरानी का स्वरूप बदल दिया। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे तब हुआ, जब नलगोंडा स्थित जिला कार्यालय के मेरे मण्डल प्रबंधक सी.सी.टी.वी. के माध्यम से डिपो की गतिविधियाँ देखकर मुझे फोन करते थे “नाइक, आपकी रेक लोडिंग धीमी है।” यह घटना बताती थी कि डिपो अब अलग-थलग इकाई नहीं, बल्कि डिजिटल रूप से जुड़े भा.खा.नि. नेटवर्क का हिस्सा बन चुका था। महामारी के दौरान स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों के बावजूद मैंने आइसोलेशन रूम से रेक डिस्पैच जारी रखा। प्रत्येक गतिविधि ऑनलाइन रियल-टाइम में दर्ज हो रही थी और भा.खा.नि. ने पी.एम.जी.के.ए.वाई. सहित देश की खाद्य सुरक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्रिय था। इस दौर ने मुझे सिखाया कि डिजिटल प्रणाली असाधारण परिस्थितियों में भी संचालन को निरंतर बनाए रखते हुए सूचना,



अन्नालयम

पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित कर सकती है।

2022-2019 – सनतनगर : पूर्णतः डिजिटल डिपो

वर्ष 2022 में जब मैं पुनः सनतनगर में प्रबंधक के रूप में लौटा, तो वर्ष 2003 की तुलना में डिपो में आए परिवर्तन को देखकर मैं अत्यंत प्रभावित हुआ। अर्ध-मैनुअल व्यवस्था अब लगभग पूरी तरह डिजिटल प्रणाली में बदल चुकी थी। वेइब्रिज को डिपो आनलाइन सिस्टम से जोड़ दिया गया था, स्टैक कार्ड डिजिटल हो गए थे, गुण नियंत्रण परिणाम ऑनलाइन उपलब्ध थे, कर्मचारियों की उपस्थिति बायोमेट्रिक हो गई थी और 24x7 सी.सी.टी.वी. निगरानी डिपो प्रबंधन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी थी। मासिक रिपोर्टों और भौतिक फाइलों की जगह अब तत्काल डिजिटल जानकारी उपलब्ध होने लगी थी। फिर भी, मैंने महसूस किया कि तकनीक प्रबंधक की जिम्मेदारियों को समाप्त नहीं करती। श्रमिक प्रबंधन, सुरक्षा, मिलर संचालन, रेलवे समन्वय, भंडारण और निरीक्षण में मानवीय नेतृत्व और निर्णय क्षमता आज भी आवश्यक हैं। पहले मैनुअल गलती को सफेद स्याही से सुधारा जा सकता था; आज डिजिटल सिस्टम में इंटर दवाते ही हर लेन-देन इलेक्ट्रॉनिक रिकार्ड का हिस्सा बन जाता है। डिजिटलीकरण ने पारदर्शिता बढ़ाई है, अनियमितताओं को छिपाना कठिन बनाया है और सही कार्य करने की जिम्मेदारी को और अधिक बढ़ा दिया है।

2024 से अभी तक – क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै : भविष्य वास्तविक समय है

2024 से क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में प्रबंधक (डिपो) के रूप में मैं भा.खा.नि. की उस परिवर्तनकारी डिजिटल यात्रा का साक्षी हूँ, जिसमें मैंने स्वयं दो युगों को करीब से देखा और जीया है। एक समय था जब पेंसिल, कार्बन पेपर और रजिस्टर हमारे काम का आधार हुआ करते थे; आज वही कार्य लैपटाप, डिजिटल डैशबोर्ड और रियल-

टाइम डेटा के माध्यम से अधिक तेज, पारदर्शी और प्रभावी ढंग से हो रहा है। मैनुअल वेइमेंट से डिजिटल वेइमेंट तक, भौतिक अभिलेखों से एकीकृत डिजिटल प्रणालियों तक भारतीय खाद्य निगम ने तकनीक के साथ कदम मिलाते हुए अपने कार्य करने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। डिपो दर्पण ने डिपो की गतिविधियों को डिजिटल निगरानी और पारदर्शिता से जोड़ा है, जबकि अन्न दर्पण ने खाद्यान्न उपलब्धता की जानकारी को आम नागरिक तक पहुँचाकर जवाबदेही और जन-भागीदारी को और मजबूत किया है। यह बदलाव केवल तकनीक का बदलाव नहीं है, बल्कि यह भा.खा.नि. की कार्य-संस्कृति में आया एक नया अध्याय है। फिर भी, इस पूरी डिजिटल यात्रा के बीच भा.खा.नि. का मूल मिशन आज भी अडिग है, राष्ट्र का पेट भरना और देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना। मुझे गर्व है कि मैंने भा.खा.नि. के उस दौर को भी देखा है, जब काम रजिस्ट्रों में दर्ज होता था और उस दौर का भी हिस्सा हूँ, जब वही काम रियल-टाइम डिजिटल डेटा के रूप में हमारे सामने होता है। समय बदला, साधन बदले, तकनीक बदली लेकिन राष्ट्रसेवा का संकल्प और मेरा सिद्धांत आज भी वही है – ईमानदारी, पारदर्शिता और समर्पण के साथ देश की खाद्य सुरक्षा में अपना योगदान देना।

“उचित वेइमेंट के बिना कोई ट्रक बाहर नहीं जाना चाहिए।

जवाबदेही के बिना कोई स्टॉक गायब नहीं होना चाहिए।

और कोई भी तकनीक ईमानदारी का स्थान नहीं ले सकती।”

यही मेरी यात्रा है “ट्रक चिट से रियल-टाइम तक।”

जय हिंद। जय भारतीय खाद्य निगम

जय डिजिटल भारतीय खाद्य निगम



मनीष कुमार यादव
सहायक श्रेणी प्रथम(सामान्य)
मंडल कार्यालय, चेन्नै



तमिलनाडु के अण्णनूर में उत्तर भारतीयों द्वारा क्रिकेट मैच का आयोजन

तमिलनाडु राज्य में स्थित चेन्नै से 18 किलो मीटर दूर अण्णनूर में चर्च रेलवे ग्राउंड में उत्तर भारतीयों द्वारा क्रिकेट मैच का आयोजन किया जा रहा है।

जिसमें तमिलनाडु क्षेत्र के लगभग हर जिले से उत्तर भारतीय क्रिकेट प्रेमी अपनी 16 आदमी का टीम बनाकर यहाँ दो से तीन दिनों तक रहकर मैच खेलते हैं उसका आनन्द उठाते हैं। जिसमें सभी दक्षिण भारत में सरकारी एवं गैर सरकारी विभाग में कार्यरत लोगों की टीम बनाकर मैच खेलने आते हैं। इसमें सभी टीमों को आठ

भाग में बांटा जाता है। जिसमें दो दिन मिलाकर कुल 15-16 मैच खेले जाते हैं। जिसका ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराया जाता है और इसमें सभी टीम मालिकों के द्वारा ऑनलाइन माध्यम से अपनी टीम के खिलाड़ियों का चयन करते हैं और उसी चयन खिलाड़ियों में से टीम का

कप्तान और उपकप्तान चुना जाता है। इस आयोजन के लिए एक समिति भी बनाई जाती है जिसके द्वारा ग्राउंड को मैच खेलने लायक समतल और पानी का



छिड़काव भी कराया जाता है। कमिटी के द्वारा सभी टीम को नाम के आधार पर ड्रेस उपलब्ध कराया जाता है। जिसमें टीम का नाम और सिम्बल उपलब्ध रहता है। इस दौरान सभी खिलाड़ियों एवम् दर्शकों को भोजन, पानी की भी व्यवस्था कमिटी के द्वारा की जाती है। जिसमें उद्घाटन के दौरान बड़े बड़े

सरकारी विभाग के अधिकारी मौजूद रहते हैं और उन्हीं के द्वारा इस खेल का उद्घाटन किया जाता है और समापन भी बड़े बड़े सरकारी विभाग के अधिकारी के द्वारा किया जाता है। समापन के समय सभी खिलाड़ियों का सम्मान किया जाता है और विजेता एवम् उप



अन्नालयम

विजेता टीम को ट्रॉफी एवं नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है जिसमें तमिलनाडु जैसे राज्य में हिन्दी में क्रिकेट का मंच संचालन किया जाता है और सभी खिलाड़ी इसका भरपूर लुप्त उठाते हैं। दर्शकों के बैठने के लिए अलग व्यवस्था ग्राउंड के चारों तरफ कुर्सी एवं धूप से बचने के लिए शामियाना लगाया जाता है। दर्शकों के लिए भी भोजन की व्यवस्था की जाती है। ये सब कोई सरकारी विभाग द्वारा राशि से नहीं बल्कि आपस में सभी खिलाड़ियों के द्वारा अंशदान द्वारा किया जाता है। इसमें कोई भेदभाव की गुंजाइश नहीं है। इसमें वहाँ के निवासी नागरिक का भी बहुत बड़ा सहयोग रहता है। वहाँ हिन्दी में मंच संचालन और क्रिकेट का कोमेंट्री होने के बाद भी वहाँ के स्थानीय लोग काफी लुप्त उठाते हैं और उन लोगों के बात करने के बाद उनका कहना है कि वे भाषा तो नहीं समझ रहे बल्कि खेल का पूरा आनंद उठाते हैं वहाँ की सारी व्यवस्था सभी खिलाड़ी एवं समिति सदस्य के द्वारा की जाती है इस मैच के दौरान कोई बाहरी मजदूर को नहीं लगाया जाता है जिसमें घास साफ करने से लेकर पानी पिलाने तक का काम सभी कमिटी मेंबर आपस में मिल-जुल कर करते हैं। वहाँ दो से तीन दिनों तक सभी खिलाड़ी के ठहरने की भी व्यवस्था आपस में मिलकर किया जाता है। कोई भी खिलाड़ी होटल में नहीं टहरते हैं खिलाड़ियों से बात करने के बाद उनका कहना है कि हम अपने-अपने घरों से हजारों किलोमीटर दूर रहने के बाद भी यहाँ आने पर हमें अपने घर जैसा माहौल और दोस्त मिल जाते हैं उनकी

यह भावना आपसी सद्भाव और प्रेम का प्रतीक है। इन खिलाड़ियों के खेल के प्रति यह भावना देखकर मन भावुक हो जाता है क्योंकि ये अपने सरकारी कामकाज के साथ-साथ प्रत्येक दिन क्रिकेट का अभ्यास करना आसान बात नहीं है क्योंकि इन खिलाड़ियों के बीच बहुत सारे खिलाड़ी अविवाहित भी हैं जिसे अपने कार्यालय के काम के साथ-साथ अपने घरों का भी काम खुद करना पड़ता है फिर भी वे क्रिकेट का अभ्यास करने के लिए अपना बहुमूल्य समय निकाल लेते हैं। इस अन्नानूर में साल में चार बार क्रिकेट का मैच कराया जाता है जिसका नाम क्रिकेट महाकुंभ के साथ-साथ अण्णनूर प्रीमियर लीग (APL) भी रखा जाता है। हर दिन हर एक समय खिलाड़ियों का हुजूम बढ़ता ही जा रहा है। दर्शकों का भी कहना है कि अपने काम के साथ-साथ यहाँ ये लोग मैच का आयोजन करना अपने आप से बहुत बड़ी बात है जहाँ भाषा की इतनी बड़ी समस्या होने से बाद भी इन लोगों के जोश में कोई कमी नहीं आ रही है। सिर्फ उत्तर भारत में त्योहार के समय ही यहाँ पर खिलाड़ियों के खेल में उत्साह फीका पड़ जाता है क्योंकि सभी खिलाड़ी अपने-अपने गृह राज्य को चले जाते हैं फिर वापस आने के बाद उसी जोश और उत्साह के साथ क्रिकेट मैच की अगली तैयारी में लग जाते हैं।

हिंदी केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय एकता और हमारे सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है।



अन्नालयम



कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन : एक सार्थक पहल



भारत एक विशाल और विविधताओं से भरा हुआ देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ विद्यमान हैं। ऐसी भाषाई विविधता वाले देश में आपसी संवाद और समन्वय स्थापित करने में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी न केवल लोगों को जोड़ने वाली संपर्क भाषा है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और भावनाओं की अभिव्यक्ति का भी सशक्त माध्यम है। भारत सरकार ने संविधान के प्रावधानों के अनुसार राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ और प्रयास

किए हैं। केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करना राजभाषा नीति का प्रमुख उद्देश्य है, ताकि सरकारी कार्य सरल, सुगम और आम जनता के लिए अधिक समझने योग्य बन सकें। भारतीय खाद्य निगम देश की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण संगठन है। निगम के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन प्रशासनिक कार्यों को अधिक सरल, पारदर्शी और प्रभावी बनाने में सहायक है। हिंदी के प्रयोग से कर्मचारियों के बीच बेहतर संवाद स्थापित होता है तथा कार्यालयीन कार्यों में सहजता और गति आती है। इस प्रकार, भारतीय खाद्य निगम जैसे महत्वपूर्ण संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार केवल सरकारी नीति का पालन ही नहीं, बल्कि देश की भाषाई एकता और प्रशासनिक सुगमता को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

तमिलनाडु क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति

तमिलनाडु एक हिंदीतर भाषी राज्य है, जहाँ विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का समृद्ध संगम



अन्नालयम

देखने को मिलता है। ऐसे क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता होती है। हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने और इसके प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र द्वारा राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विभिन्न पहल की जाती हैं। कार्यालय के दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए पत्राचार, नोटिंग, ड्राफ्टिंग, रिपोर्ट तैयार करने तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है। कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया जाता है, जिससे वे अपने कार्यों को सरलता और प्रभावी ढंग से हिंदी में कर सकें। राजभाषा हिंदी के प्रयोग से कार्यालयीन कार्यों में सहजता, स्पष्टता और पारदर्शिता आती है। भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र द्वारा किए जा रहे ये प्रयास हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि और आत्मविश्वास बढ़ाने में भी सहायक हैं।

हिंदी प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए कर्मिकों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य कर्मचारियों को हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने के लिए सक्षम बनाना तथा उनमें हिंदी के प्रति रुचि और आत्मविश्वास उत्पन्न करना है। इसके अंतर्गत हिंदी टंकण प्रशिक्षण, हिंदी कार्यशालाएँ, अनुवाद प्रशिक्षण तथा हिंदी ज्ञान से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से कर्मचारी हिंदी में नोटिंग, ड्राफ्टिंग, पत्राचार और अन्य कार्यालयीन कार्यों को अधिक सरलता और कुशलता से कर पाते हैं। नियमित प्रशिक्षण और प्रोत्साहन से कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग के प्रति सकारात्मक भावना विकसित

होती है। इससे कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का उपयोग बढ़ता है और राजभाषा नीति के उद्देश्यों को प्रभावी रूप से पूरा करने में सहायता मिलती है।

राजभाषा संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन

तमिलनाडु क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि एवं जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों को अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण किया जाता है। हिंदी के प्रति उत्साह और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर हिंदी के महत्व, उपयोगिता तथा विकास से संबंधित विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त हिंदी निबंध लेखन, कविता पाठ, भाषण, प्रश्नोत्तरी, अंताक्षरी, टिप्पणी एवं आलेखन तथा हिंदी टंकण जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे हिंदी भाषा के प्रति उनकी रुचि, आत्मविश्वास तथा अभिव्यक्ति-कौशल में वृद्धि होती है। कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्य हिंदी में प्रभावी एवं दक्षतापूर्वक करने के लिए समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है। इन कार्यशालाओं में हिंदी व्याकरण, राजभाषा अधिनियम एवं नियम, कार्यालयीन टिप्पण, प्रारूपण (ड्राफ्टिंग) तथा अन्य राजभाषा संबंधी कार्यों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। साथ ही, कार्यालय में एक समृद्ध हिंदी पुस्तकालय का संचालन भी किया जाता है, जहाँ कर्मचारियों के लिए हिंदी की विभिन्न विधाओं से संबंधित पुस्तकें,



अन्नालयम

शब्दकोश, राजभाषा संबंधी प्रकाशन तथा अन्य संदर्भ सामग्री उपलब्ध रहती है। इससे कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान बढ़ाने, भाषा-कौशल विकसित करने तथा कार्यालयीन कार्यों के लिए सुसज्जित एवं प्रभावी शैली में हिंदी लेखन करने में सहायता मिलती है।

प्रोत्साहन के माध्यम से हिंदी का विकास

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन एवं विकास में प्रोत्साहन की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब कर्मचारियों को हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने के लिए अनुकूल वातावरण, आवश्यक संसाधन तथा समय-समय पर प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है, तो उनमें हिंदी के प्रयोग के प्रति रुचि, आत्मविश्वास एवं कार्यकुशलता का विकास होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु विभिन्न प्रोत्साहनपरक योजनाएँ संचालित की जाती हैं। कार्यालय में हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना के अंतर्गत कर्मचारियों को अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस योजना के माध्यम से हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन करने वाले कर्मचारियों को नकद पुरस्कार से प्रोत्साहित एवं सम्मानित किया जाता है, जिससे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा मिलता है। इसके अतिरिक्त, कर्मचारियों को हिंदी भाषा में दक्ष बनाने के उद्देश्य से आयोजित प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर राजभाषा नीति के प्रावधानों के अनुसार प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। यह प्रोत्साहन न केवल कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि उन्हें कार्यालयीन कार्यों का निष्पादन हिंदी में अधिक प्रभावी एवं आत्मविश्वासपूर्वक करने के लिए भी उत्साहित करता है। इन प्रोत्साहनपरक उपायों के परिणामस्वरूप कर्मचारियों में हिंदी के प्रति

सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है तथा कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं कार्यान्वयन को सुदृढ़ आधार प्राप्त होता है।

डिजिटल युग में हिंदी का सशक्त प्रयोग

वर्तमान डिजिटल युग में सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास के साथ कार्यालयीन कार्यप्रणाली में व्यापक परिवर्तन आया है। ऐसे परिवेश में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए कंप्यूटर, ई-मेल, कार्यालयीन साफ्टवेयर तथा अन्य डिजिटल माध्यमों में हिंदी के प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे न केवल हिंदी में कार्य करना सरल एवं सुविधाजनक हुआ है, बल्कि कार्यालयीन कार्यों की गति और गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है। यूनिकोड आधारित हिंदी टंकण प्रणाली ने डिजिटल माध्यमों में हिंदी के प्रयोग को अत्यंत सहज, प्रभावी एवं व्यावहारिक बना दिया है। आज यूनिकोड के साथ-साथ कंठस्य, भाषिणी, अनुवादिनी तथा सारथी जैसे आधुनिक डिजिटल प्लेटफार्म एवं भाषा प्रौद्योगिकी उपकरण हिंदी में कार्यालयीन कार्यों को अधिक सरल, तीव्र और गुणवत्तापूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन तकनीकों के माध्यम से हिंदी में तैयार किए गए दस्तावेज विभिन्न कंप्यूटर प्रणालियों, आपरेंटिंग सिस्टमों तथा डिजिटल प्लेटफार्मों पर बिना किसी तकनीकी बाधा के तैयार, पढ़े, साझा और सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

द्विभाषिकता के माध्यम से राजभाषा नीति का प्रभावी कार्यान्वयन :

राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के अंतर्गत कार्यालय में जारी किए जाने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेज, कार्यालय आदेश, परिपत्र, अधिसूचनाएँ, प्रपत्र, सूचना-पट्ट तथा अन्य आवश्यक सामग्री हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराई जाती है। द्विभाषिक व्यवस्था का उद्देश्य कर्मचारियों, अधिकारियों तथा अन्य



अन्नालयम

हितधारकों को आवश्यक सूचनाएँ सहज, स्पष्ट एवं सुगम रूप से उपलब्ध कराना है, जिससे वे कार्यालयीन निर्देशों एवं प्रक्रियाओं को भली-भाँति समझ सकें। इसके अतिरिक्त, द्विभाषिक कार्य प्रणाली प्रशासनिक पारदर्शिता, कार्यकुशलता तथा प्रभावी संचार को भी सुदृढ़ बनाती है। हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सूचनाओं की उपलब्धता से सभी वर्गों के कर्मचारियों और हितधारकों के लिए आवश्यक जानकारी तक समान रूप से पहुँच सुनिश्चित होती है। इस प्रकार, द्विभाषिकता न केवल राजभाषा हिंदी के क्रमिक संवर्धन का प्रभावी माध्यम है, बल्कि कार्यालय में समावेशी, सुचारु एवं उत्तरदायी प्रशासनिक व्यवस्था को भी सुदृढ़ आधार प्रदान करती है।

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की चुनौतियाँ एवं समाधान : तमिलनाडु जैसे हिंदीतर क्षेत्र में राज भाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन अनेक उपलब्धियों के साथ कुछ व्यावहारिक चुनौतियों का भी सामना करता है। यहाँ की भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता के कारण कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना सतत प्रयास एवं योजनाबद्ध कार्यान्वयन की अपेक्षा करता है। प्रमुख चुनौतियों में कर्मचारियों की भाषाई विविधता, हिंदी भाषा का सीमित व्यावहारिक ज्ञान तथा दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अंग्रेजी एवं स्थानीय भाषा का अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग शामिल हैं। अनेक कर्मचारी हिंदी को समझने में सक्षम होते हैं, किंतु कार्यालयीन पत्राचार, टिप्पण, आलेखन तथा अन्य प्रशासनिक कार्य हिंदी में करने में संकोच अनुभव करते हैं। इसके अतिरिक्त, तकनीकी एवं प्रशासनिक शब्दावली के सीमित ज्ञान के कारण भी हिंदी के प्रयोग में अपेक्षित गति नहीं आ पाती। इन चुनौतियों के प्रभावी समाधान के लिए नियमित हिंदी कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ जैसी हिंदी शिक्षण योजनाओं

का आयोजन अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। साथ ही, हिंदी में कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहन राशि, पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर उन्हें अधिकाधिक हिंदी प्रयोग के लिए प्रेरित किया जाता है। आधुनिक डिजिटल साधनों, यूनिकोड आधारित हिंदी टंकण, भाषिणी, अनुवादिनी तथा अन्य भाषा प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग भी हिंदी में कार्यालयीन कार्य को सरल एवं सुगम बना रहा है। निरंतर प्रशिक्षण, सकारात्मक कार्य वातावरण, प्रशासनिक सहयोग तथा प्रोत्साहनपरक उपायों के माध्यम से इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक समाधान किया जा सकता है। समन्वित प्रयासों से हिंदी के प्रति कर्मचारियों का आत्मविश्वास और अभिरुचि निरंतर बढ़ रही है, जिससे तमिलनाडु जैसे हिंदीतर क्षेत्र में भी राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन सुदृढ़ एवं गतिशील रूप से आगे बढ़ रहा है।

भविष्य की दिशा :

भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन को और अधिक सुदृढ़ एवं व्यापक बनाने के लिए निरंतर, योजनाबद्ध एवं समन्वित प्रयासों किए जा रहे हैं। राजभाषा नीति का उद्देश्य केवल कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना ही नहीं, बल्कि हिंदी को प्रशासनिक दक्षता, प्रभावी संवाद तथा राष्ट्रीय एकता की सशक्त भाषा के रूप में स्थापित करना भी है। इसलिए हिंदी को केवल राजभाषा के रूप में नहीं, बल्कि संपर्क, सहयोग और समन्वय की भाषा के रूप में विकसित करने की दिशा में सतत प्रयास किए जा रहे हैं। भविष्य में नियमित हिंदी प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, प्रोत्साहनपरक योजनाओं तथा नवीन तकनीकी साधनों के समन्वित उपयोग से कर्मचारियों में हिंदी के प्रति आत्मविश्वास, दक्षता एवं अभिरुचि को और अधिक सुदृढ़ किए जा रहे हैं। प्रशासनिक नेतृत्व, कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता



अन्नालयम

तथा तकनीकी नवाचारों के समन्वय से भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में बेहतर काम करने हेतु प्रयास जारी है।

राजभाषा हिंदी देश की एकता, प्रशासनिक समन्वय और आपसी संवाद को सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिंदी के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और संस्कृतियों के बीच बेहतर संपर्क एवं सहयोग स्थापित होता है। भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता, नियमित हिंदी प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, प्रोत्साहन योजनाओं तथा विभिन्न राजभाषा कार्यक्रमों के माध्यम से कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। इन प्रयासों से कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हुआ है। राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान की भावना को बढ़ावा देते हुए उसके व्यावहारिक प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहित करना आवश्यक है। सामूहिक प्रयासों, तकनीकी साधनों के उपयोग और कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से राजभाषा नीति के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार, हिंदी न केवल कार्यालयीन कार्यों की प्रभावी भाषा बनेगी, बल्कि प्रशासनिक दक्षता, सहयोग और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।



अतीषा ए
सहायक श्रेणी तृतीय(तक.)
मंडल कार्यालय, कोयंबटूर

कर्म ही पूजा

कर्म ही पूजा
भाग्य नहीं, परिश्रम लिखता,
जीवन का हर गीत।
मेहनत करने वाले पाते,
सफलता की प्रीत।
कर्मपथ पर जो बढ़ते हैं,
रुकते नहीं कभी।
उनके चरणों में झुक जाती,
मंजिल स्वयं सभी।



अन्नालयम



पंकज सिंह
सहायक श्रेणी तृतीय(राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कडलूर



टिप्पणीकार

तुम घर में रहते हो, हम सरहद पर
तुम रिश्तों को बाँटते हो,
हम नए रिश्ते बना लेते हैं
तुम परिवार से अलग रहना चाहते हो
हम परिवार के साथ को तरसते हैं
तुम अपने माता-पिता से दूर जाना चाहते हो
हम धरती माँ के गोद में समा जाने को लालायित हैं।
तुम अपनों के प्यार को बन्धन समझते हो,
हम गैरों में भी अपनापन ढूँढ लेते हैं।

यह फर्क नहीं विचार है
देश के लिए खून बहाना बस हमारा अधिकार है ?
राष्ट्र के खुशी में खुश, दुख में दुखी,
तुम होते हो हम भी होते हैं
फिर एक के लिए कर्तव्य का दिखावा
दूसरे के लिए कर्तव्य का कफन।
घर बैठ युद्ध की योजना हमसे बेहतर बनाते हो,
तुरन्त एक्शन ना लेने पर
सरकार के साथ हमें भी कायर और घूसखोर बताते हो।
हमारे मौत पर आप टिप्पणी करते हो,
युद्ध की कमजोर रणनीति का हवाला देते हो।
घर बैठ टिप्पणी करने वाले युद्ध में आ जाएं,
हमें भी खुशी होगी गर आप का रक्त भी देश के काम आए।
आप भी सरहद पर खड़े हो
युद्ध की योजना बनाएं,
खुशी होगी गर सरहद आपके निगरानी में सुरक्षित हो जाए।



शाइखत राय
सहायक श्रेणी प्रथम(डिपो)
मंडल कार्यालय, वेल्लोर



भूलती संस्कृति, रुठती मिट्टी भारतीय कृषि और सेहत को नई जिंदगी देंगे ये पारंपरिक बीज

कुछ दशक पहले तक भारत में लगभग 1,10,000 से 2,00,000 तक स्वदेशी धान की किस्में (Landraces) मौजूद थीं। लेकिन 1960 के दशक में आई 'हरित क्रांति' के बाद, अधिक उपज देने वाली हाइब्रिड किस्मों और रासायनिक खेती के चलन के कारण यह जैविक विविधता तेजी से घट गई। आज केवल 6,000 से भी कम पारंपरिक किस्में खेतों में बची हैं। बदलते मौसम, सूखे और मिट्टी की घटती उपजाऊ शक्ति के इस दौर में, भारतीय पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) को बचाने के लिए इन स्वदेशी किस्मों का पुनरुद्धार बेहद जरूरी हो गया है।

1. जलवायु परिवर्तन के खिलाफ प्राकृतिक सुरक्षा कवच

हमारी स्वदेशी धान की किस्में सदियों से स्थानीय मौसम और मिट्टी के अनुकूल खुद को ढाल चुकी हैं। यही कारण है कि ये विपरीत परिस्थितियों में भी बिना किसी नुकसान के जीवित रह

सकती हैं :

बाढ़ और खारे पानी को सहने की क्षमता : चक्रवातों (जैसे अम्फान या आसनी) के बाद जब तटीय क्षेत्रों के खेतों में समुद्र का खारा पानी भर जाता है, तो आधुनिक हाइब्रिड फसलें पूरी तरह बर्बाद हो जाती हैं। ऐसे समय में पश्चिम बंगाल की 'नोना बोकरा', 'तालमुगुर' या केरल की 'पोक्कली' जैसी किस्में खारे पानी में भी बेहतरीन उपज देती हैं। वहीं, असम और बिहार के बाढ़ प्रवण क्षेत्रों में पाई जाने वाली गहरी पानी की किस्में बाढ़ के स्तर के साथ अपनी लंबाई को 12 फीट तक बढ़ा लेती हैं।

सूखा सहने की क्षमता : झारखंड, छत्तीसगढ़ या पुरुलिया जैसे कम बारिश वाले क्षेत्रों में 'गोरा', और 'बाघपांजरा' जैसी किस्में अपनी गहरी जड़ों के कारण जमीन की नमी सोख लेती हैं और गंभीर सूखे में भी अनाज पैदा करती हैं।

अन्नालयम

2. मिट्टी का स्वास्थ्य और प्राकृतिक कीट नियंत्रण : आधुनिक हाइब्रिड धान को भारी मात्रा में रासायनिक खादों और कीटनाशकों की जरूरत होती है, जिससे मिट्टी बंजर होती जा रही है और भूजल प्रदूषित हो रहा है। इसके विपरीत, पारंपरिक किस्में पर्यावरण के अनुकूल हैं :

कम लागत और कम खाद : इन पौधों की जड़ें मिट्टी में मौजूद प्राकृतिक पोषक तत्वों को आसानी से ग्रहण कर लेती हैं, जिससे महंगे रासायनिक खादों की जरूरत नहीं पड़ती।

3. पोषण का भण्डार और स्वास्थ्य लाभ

आधुनिक मशीनों से पॉलिश किए गए सफेद चावल में जिंक, आयरन और कैल्शियम जैसे जरूरी पोषक तत्व लगभग खत्म हो जाते हैं। इसके विपरीत, पारंपरिक रंगीन चावल औषधीय गुणों और पोषण से भरपूर होते हैं। कुछ उदाहरण :

धान/चावल का नाम	मूल क्षेत्र	मुख्य विशेषता और पोषण लाभ
गोविंदोभोग और तुलाईपांजी	पश्चिम बंगाल	सुगंधित और छोटे दाने वाला चावल, जो बेहतरीन स्वाद और ऊर्जा से भरपूर है।
कालाभाट	पूर्वी भारत	आयरन और जिंक से भरपूर काला चावल, जो एनीमिया खून की कमी को दूर करने में सहायक है।
चाकहाओ	मणिपुर	गहरा बैंगनी—काला सुगंधित चावल, जो एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर है।
काट्टुयानम और नवारा	दक्षिण भारत	औषधीय लाल चावल, जिसका लो-ग्लाइसेमिक इंडेक्स मधुमेह को नियंत्रित रखने में मदद करता है।

निष्कर्ष : भारत की पारंपरिक धान की किस्में कोई बीता हुआ कल नहीं हैं, बल्कि वे प्रकृति की विकसित की हुई एक बेहतरीन तकनीक हैं। देश की कृषि को टिकाऊ बनाने और आने वाली पीढ़ियों को पोषण सुरक्षा देने के लिए, इन बीजों को सरकारी कोल्ड स्टोरेज से निकालकर दोबारा किसानों के खेतों तक पहुंचाना समय की सबसे बड़ी मांग है।



अन्नालयम



डॉ. वेलेंटिना
प्रबंधक(गुणवत्ता नियंत्रण)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



भारत का महिला सुरक्षा - सशक्त राष्ट्र की आधारशिला सफर



“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता” यह प्राचीन भारतीय उक्ति स्पष्ट करती है कि जिस समाज में नारी का सम्मान होता है, वहाँ समृद्धि, शांति और विकास का वास होता है। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति, करुणा, ज्ञान और सृजन का प्रतीक माना गया है। माँ, बहन, बेटी, पत्नी और कर्मयोगिनी के रूप में वह परिवार और समाज की आधारशिला है। आज महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, रक्षा, न्यायपालिका, खेल, अंतरिक्ष, उद्योग

तथा राजनीति जैसे प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं। इसके बावजूद महिला सुरक्षा आज भी देश के समक्ष एक गंभीर सामाजिक, नैतिक और राष्ट्रीय चुनौती बनी हुई है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का वास्तविक मापदंड उसकी आर्थिक समृद्धि नहीं, बल्कि वहाँ की महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और समान भागीदारी है। यदि महिलाएँ भय, हिंसा और असुरक्षा के वातावरण में जीवन जीने के लिए विवश हों, तो विकास की कोई भी उपलब्धि अधूरी मानी जाएगी। इसलिए महिला सुरक्षा केवल कानून-व्यवस्था का विषय नहीं, बल्कि मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और राष्ट्र निर्माण का प्रश्न है।

वर्तमान समय में महिलाओं के विरुद्ध अपराध अनेक रूपों में सामने आ रहे हैं। घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, बाल विवाह, मानव तस्करी, यौन उत्पीड़न, कार्यस्थल पर भेदभाव, एसिड अटैक, साइबर



अन्नालयम

बुलिंग, ऑनलाइन धोखाधड़ी तथा सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाले अपराध महिलाओं के आत्मविश्वास और स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं। तीव्र शहरीकरण, तकनीकी विस्तार और बदलती जीवनशैली ने जहाँ महिलाओं को नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। विशेष रूप से साइबर अपराधों में वृद्धि ने डिजिटल सुरक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है।

महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण कानून एवं योजनाएँ लागू की हैं। घरेलू हिंसा से संरक्षण संबंधी कानून, कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम संबंधी प्रावधान, कठोर आपराधिक कानून, महिला हेल्पलाइन (181), आपात कालीन सेवा (112), निर्भया फंड, वन स्टॉप सेंटर तथा “बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ” जैसी पहलें महिलाओं को सुरक्षा और न्याय उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हैं। पुलिस व्यवस्था का आधुनिकीकरण, महिला पुलिस थानों की स्थापना, फास्ट ट्रैक न्यायालयों का गठन तथा डिजिटल शिकायत प्रणाली भी न्याय तक पहुँच को अधिक प्रभावी बना रहे हैं।

किन्तु केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है। कानून तभी प्रभावी सिद्ध होते हैं, जब समाज में उनके प्रति जागरूकता और उनका पालन करने की सामूहिक इच्छा हो। महिलाओं की सुरक्षा का सबसे मजबूत आधार परिवार से प्रारम्भ होता है। यदि बचपन से ही बेटियों और बेटों को समान अवसर दिए जाएँ तथा लड़कों में महिलाओं के प्रति सम्मान, संवेदनशीलता

और समानता की भावना विकसित की जाए, तो भविष्य में अपराधों की संख्या स्वतः कम हो सकती है। शिक्षा केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का भी आधार है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में नैतिक शिक्षा, लैंगिक समानता, संवैधानिक मूल्यों तथा पारस्परिक सम्मान पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

महिला सुरक्षा में तकनीक की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती जा रही है। आज जीपीएस आधारित सार्वजनिक परिवहन, सीसीटीवी कैमरे, महिला सुरक्षा मोबाइल एप्लिकेशन, डिजिटल हेल्पलाइन, त्वरित पुलिस प्रतिक्रिया प्रणाली तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी व्यवस्थाएँ महिलाओं की सुरक्षा को सुदृढ़ बना रही हैं। साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में भी महिलाओं को सुरक्षित पासवर्ड, डिजिटल गोपनीयता, ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव तथा साइबर अपराध की रिपोर्टिंग संबंधी जानकारी प्रदान करना आवश्यक है।

महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाना भी सुरक्षा का महत्वपूर्ण पक्ष है। आर्थिक रूप से सशक्त महिला अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक होती है तथा अन्याय का सामना करने का साहस रखती है। कौशल विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार के अवसर, आत्मरक्षा प्रशिक्षण और कानूनी साक्षरता महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रभावी साधन हैं। आत्मरक्षा का प्रशिक्षण केवल शारीरिक सुरक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता और आत्मविश्वास का भी विकास करता है।



अन्नालयम

महिला सुरक्षा सुनिश्चित करने में नागरिक समाज, मीडिया, शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों तथा प्रत्येक नागरिक की महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया को ऐसी सामग्री प्रस्तुत करनी चाहिए जो महिलाओं की गरिमा और सम्मान को बढ़ावा दे। सोशल मीडिया का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग किया जाना चाहिए और किसी भी प्रकार के उत्पीड़न, अफवाह या अपमानजनक सामग्री का विरोध किया जाना चाहिए। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति किसी महिला के साथ होने वाले अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाए और पीड़िता का सहयोग करे, तो अपराधियों में दंड का भय और समाज में सुरक्षा का विश्वास दोनों मजबूत होंगे।

कार्यस्थलों पर भी महिलाओं के लिए सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण सुनिश्चित करना प्रत्येक संस्था की जिम्मेदारी है। लैंगिक संवेदनशीलता, शिकायत निवारण तंत्र की प्रभावशीलता तथा समान अवसर की संस्कृति किसी भी संगठन की कार्यक्षमता और विश्वसनीयता को बढ़ाती है। जब महिलाएँ बिना भय के अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकेंगी, तभी राष्ट्र की उत्पादक क्षमता और विकास गति दोनों में वृद्धि होगी।

भारत आज “विकसित भारत 2047” के लक्ष्य की ओर अग्रसर है। इस लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है जब देश की आधी आबादी सुरक्षित, शिक्षित, आत्मनिर्भर और सम्मानित हो। महिला सुरक्षा किसी एक मंत्रालय, विभाग, पुलिस या न्याय पालिका का दायित्व नहीं है; यह सरकार, समाज, परिवार और प्रत्येक नागरिक की साझा जिम्मेदारी है।

महिलाओं के प्रति सम्मान केवल विशेष अवसरों पर व्यक्त किया जाने वाला विचार नहीं, बल्कि दैनिक जीवन का व्यवहार बनना चाहिए।

आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि महिलाओं के सम्मान, समानता और सुरक्षा को अपने जीवन का अभिन्न मूल्य बनाएँगे। हम अपने परिवार, कार्यस्थल और समाज में ऐसा वातावरण निर्मित करेंगे जहाँ प्रत्येक महिला बिना किसी भय के अपने सपनों को साकार कर सके। एक सुरक्षित महिला ही आत्मविश्वासी नागरिक बनती है, आत्मविश्वासी नागरिक सशक्त समाज का निर्माण करते हैं और सशक्त समाज ही विकसित राष्ट्र की पहचान होता है।

अंत में मैं स्वामी विवेकानंद के इन प्रेरणादायक शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूँगी -

“जिस राष्ट्र ने अपनी महिलाओं का सम्मान करना सीख लिया, वही राष्ट्र विश्व में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता है।”

आइए, हम सब मिलकर एक ऐसे भारत के निर्माण का संकल्प लें जहाँ प्रत्येक महिला सुरक्षित हो, सम्मानित हो और समान अवसरों के साथ अपने सपनों को साकार कर सके। यही सच्चे अर्थों में सशक्त, समृद्ध और विकसित भारत की पहचान होगी।

धन्यवाद।





अन्नालयम



राजदीप चौधरी
सहायक श्रेणी तृतीय (रा.भा.)
मंडल कार्यालय, वेल्लोर



तमिलनाडु के प्राकृतिक सौंदर्य



भारत के दक्षिण-पूर्वी तट पर बसा तमिलनाडु केवल अपने मंदिरों और संस्कृति के लिए ही नहीं, बल्कि अपने अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य के लिए भी जाना जाता है। यहाँ प्रगति ने अपनी सारी विविधता एक ही राज्य में समेट दी है। एक ओर बंगाल की खाड़ी का असीम नीला समुद्र है, तो दूसरी ओर पश्चिमी और पूर्वी घाट की धुंध से लिपटी पहाड़ियाँ हैं। तमिलनाडु की पहाड़ियाँ इसकी सबसे बड़ी खूबसूरती हैं। नीलगिरी की पहाड़ियों में बसा ऊटी अपनी चाय के बागानों,

देवदार के जंगलों और ठंडी वादियों के कारण “पहाड़ों की रानी” कहलाता है। कोडैकनाल की स्टार आकार की झील, पिलर रॉक्स और बादलों से ढकी घाटियाँ मन को शांति देती हैं। हर बारह साल में एक बार खिलने वाला नीलकुरिंजी फूल जब पूरी नीलगिरी की घाटी को नीला कर देता है, तो वह दृश्य जीवनभर नहीं भूलता। पूर्वी घाट का यरकाड अपने कॉफी के बागानों और संतरे के बगीचों से महकता रहता है। समुद्र तट तमिलनाडु के सौंदर्य में चार चाँद लगाते हैं। चेन्नै का मरीना बीच दुनिया का दूसरा सबसे लंबा शहरी समुद्र तट है, जहाँ सुबह की सैर और शाम का सूरज डूबना दोनों ही यादगार हैं। रामेश्वरम और धनुषकोडी में बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर का मिलन देखने को मिलता है। भारत के दक्षिणतम छोर कन्याकुमारी में खड़े होकर तीन समुद्रों - बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिंद महासागर - का संगम देखना एक अद्भुत अनुभव है। यहाँ से सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों



अन्नालयम

एक ही जगह से दिखते हैं। राज्य की नदियाँ और झरने भी कम आकर्षक नहीं हैं। कावेरी नदी को तमिलनाडु की जीवनरेखा कहा जाता है। इसके डेल्टा क्षेत्र को “दक्षिण भारत का चावल का कटोरा” कहते हैं। कावेरी पर बना होगेनक्कल झरना अपनी गर्जना और औषधीय पानी के लिए “भारत का नियाग्रा” कहलाता है। कुत्तालम के नौ झरनों का पानी जड़ी-बूटियों वाले जंगलों से होकर आता है, इसलिए इसे “दक्षिण का स्या” भी कहते हैं। तमिलनाडु के जंगल और वन्यजीव अभयारण्य जैव विविधता से भरपूर हैं। मुदुमलै और अन्नामलै के घने जंगलों में बाघ, हाथी, नीलगिरी तहर और शेर-पूँछ वाले मकाक जैसे दुर्लभ जीव रहते हैं। वेडन्यांगल पक्षी अभयारण्य सर्दियों में हजारों प्रवासी पक्षियों से गुलजार हो जाता है। पिचावरम का मैंग्रोव वन दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव जंगल है, जहाँ संकरी नहरों में नाव की सवारी करना रोमांच से भर देता है। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल पश्चिमी घाट तमिलनाडु के मौसम को नियंत्रित करता है और हजारों वनस्पतियों और जीवों का घर है। यहाँ की हरियाली, झरनों का संगीत, समुद्र की लहरों की आवाज और पहाड़ों की शांति मिलकर तमिलनाडु को प्रति प्रेमियों के लिए स्वर्ग बना देती है। इस प्रकार तमिलनाडु का प्राकृतिक सौन्दर्य विविधता और भव्यता का अनूठा संगम है। यहाँ आकर लगता है मानो प्रगति ने अपना सबसे सुंदर रूप इसी भूमि पर

उतार दिया हो।

निष्कर्ष : तमिलनाडु का सौन्दर्य सिर्फ मंदिरों तक सीमित नहीं है। यहाँ के पहाड़ों की हरियाली, समुद्र की लहरें, झरनों का शोर और जंगलों की शांति मिलकर इसे प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग बनाते हैं। यह राज्य भारत की प्राकृतिक विविधता का जीता-जागता उदाहरण है।





अन्नालयम



संगीता आर
सहायक श्रेणी द्वितीय(तक.)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



एक मात्र स्थान सत्य है 'परिवर्तन'



“समय हमारे आसपास की दुनिया को बदल देता है, जबकि हमारे संस्कार और चरित्र हमारे भीतर की दुनिया को आकार देते हैं।”

जीवन निरंतर परिवर्तन की एक सुंदर यात्रा है। एक समय था जब घरों में दादा-दादी, चाचा-चाची, मामा-मामी और भाई-बहनों की हँसी गूँजती थी और पूरा परिवार एक ही छत के नीचे रहता था। आज हममें से बहुत से लोग छोटे-छोटे एकल परिवारों में रहते हैं। हमारे काम करने का तरीका बदल गया है। हमारे भोजन की

आदतें बदल गई हैं। तकनीकी ने हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। हमारा परिवेश, हमारे रिश्ते, हमारी प्राथमिकताएँ और यहाँ तक कि हमारा पर्यावरण भी हर गुजरते दिन के साथ निरंतर बदल रहा है।

परिवर्तन अपरिहार्य है। यह प्रगति का वह तरीका है, जो हमें याद दिलाता है कि जीवन हमेशा आगे बढ़ता रहता है।

फिर भी, इस निरंतर परिवर्तन के बीच हमारे भीतर कुछ ऐसा है, जो अछूता रहता है - “हमारे अंतर्मन की आवाज” हमें मिले संस्कार, हमारे द्वारा दिखाई जाने वाली करुणा, हमारे संजोए हुए सपने और शांतिपूर्ण जीवन जीने की हमारी इच्छा हमारी आत्मा में गहराई से जड़ें जमाए रहते हैं। ये आंतरिक गुण बदलती हुई दुनिया से कहीं अधिक हमारे व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं।

आज की तेज़ रफ्तार दुनिया में हम अक्सर हर किसी से जुड़े रहते हैं, सिवाय स्वयं से। हम बैठकें निर्धारित करते हैं, फोन का जवाब देते हैं और संदेशों का उत्तर देते हैं, लेकिन कुछ पल ठहरकर



अन्नालयम

यह पूछना भूल जाते हैं — “मैं वास्तव में कैसा महसूस कर रहा हूँ?” स्वयं से संवाद करना अकेलेपन का संकेत नहीं है; बल्कि यह “आत्म—जागरूकता का प्रतीक है।”

जिस प्रकार किसी कंप्यूटर को बेहतर ढंग से काम करने के लिए समय—समय पर रीबूट और सिस्टम चेक की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानव मन को भी कुछ क्षणों के मौन और आत्मचिंतन की आवश्यकता होती है। प्रगति के बीच टहलना, किसी नई जगह की यात्रा करना, अच्छी पुस्तक पढ़ना, दिल से किसी से बातचीत करना या कुछ मिनट शांत बैठना हमारे विचारों को तरोताजा कर सकता है और रोज़मर्रा की एकरसता को तोड़ सकता है।

हम अपने जीवन में सबसे बड़ा निवेश “स्वयं पर” कर सकते हैं। अपनी क्षमताओं पर विश्वास कीजिए, अपनी अंतरात्मा की आवाज़ पर भरोसा कीजिए और अपनी क्षमता को कभी कम मत आँकिए। आत्मविश्वास हर उपलब्धि की नींव है। आशा हमारे भीतर से जन्म लेती है और दुनिया में होने वाला प्रत्येक सकारात्मक परिवर्तन स्वयं में किए गए सकारात्मक परिवर्तन से शुरू होता है।

“जीवन सबसे बड़ा शिक्षक है।” हर मौसम हमें कुछ अलग सिखाता है। हम जिन लोगों से मिलते हैं, उनमें से प्रत्येक हमारे जीवन—यात्रा का एक अध्याय बन जाता है। सफलता हमें आत्म विश्वास सिखाती है, जबकि असफलता हमें दृढ़ता और संघर्षशीलता का पाठ पढ़ाती है। कभी—कभी जीवन हमें ऐसी अप्रत्याशित परिस्थितियाँ और अवसर देता है, जिनके

माध्यम से हमें अपनी उन प्रतिभाओं का पता चलता है, जिनके बारे में हमें स्वयं भी पता नहीं था। व्यक्तिगत अनुभवों से सीखे गए सबक जीवनभर हमारे साथ रहते हैं, क्योंकि वे उधार लिए हुए नहीं, बल्कि स्वयं अर्जित किए हुए होते हैं।

हालाँकि, एक सत्य अपरिवर्तित रहता है — “समय कभी किसी के लिए नहीं रूकता”

बचपन की कॉमिक्स में जिन टाइम मशीनों को देखकर हम रोमांचित होते थे, उनके विपरीत जीवन में कोई “रीवाइंड बटन” नहीं होता। बीता हुआ कल स्मृति बन जाता है, आने वाला कल अनिश्चितता बना रहता है और “आज का दिन ही वह एकमात्र क्षण है, जो वास्तव में हमारे हाथ में है।” हम एक मासूम बच्चे से जिम्मेदार वयस्क और अंततः एक अनुभवी एवं बुद्धिमान बुजुर्ग बन जाते हैं। हर गुजरते वर्ष के साथ हम केवल उम्र में ही नहीं, बल्कि समझ और अनुभव में भी परिपक्व होते जाते हैं।

जीवन की बदलती प्राथमिकताओं को एक सरल विचार बहुत खूबसूरती से व्यक्त करता है —

“जब हमारे पास समय और स्वास्थ्य होता है, तब अक्सर धन की कमी होती है।”

“जब हमारे पास धन और स्वास्थ्य होता है, तब समय की कमी हो जाती है।”

“और जब अंततः हमारे पास समय और धन दोनों होते हैं, तब हो सकता है कि स्वास्थ्य हमारा साथ न दे।”

शायद जीवन हमें धीरे से यही याद दिलाता है कि खुशियाँ परिस्थितियों के पूर्ण और अनुकूल संयोजन की प्रतीक्षा



अन्नालयम

करने में नहीं मिलती। “खुशी तो हमारे पास आज जो कुछ है, उसे संजोने और उसका आनंद लेने में हैं।”

लोग अक्सर कहते हैं कि बड़े होने के साथ हमारी मासूमियत खो जाती है। शायद ऐसा नहीं है — वह केवल जिम्मेदारियों, महत्वाकांक्षाओं और जीवन की अनगिनत चुनौतियों के नीचे कहीं छिप जाती है। हमारे भीतर का बच्चा आज भी छोटी-छोटी खुशियों पर मुस्कुराता है, प्रेम चाहता है और सच्चे मानवीय संबंधों की तलाश करता है।

हर सूर्योदय एक नई शुरुआत का अवसर देता है। हर गुजरता हुआ क्षण हमें सीखने, क्षमा करने, स्वयं को बेहतर बनाने और दूसरों के जीवन में “दयालुता एवं सद्भाव” फैलाने का एक और अवसर देता है। समय हमारे आसपास की दुनिया को बदल देता है, लेकिन उन परिवर्तनों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया ही हमारे जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करती है।

इसलिए आइए, परिवर्तन से डरने के बजाय उसका स्वागत करें। हर अनुभव से सीखें, हर रिश्ते को संजोएँ और निरंतर स्वयं का बेहतर रूप बनने का प्रयास करें। क्योंकि हम घड़ी की सुइयों को रोक नहीं सकते, लेकिन “हर पल को निश्चित रूप से सार्थक बना सकते हैं।”

“आखिरकार, जीवन इस बात से नहीं मापा जाता कि हमारे पास कितना समय है, बल्कि इस बात से मापा जाता है कि समय द्वारा लाए गए परिवर्तनों के बीच हम कितनी खूबसूरती से विकसित होते हैं।”



केल्वमथी प्रभाकर
सहायक श्रेणी द्वितीय(तक)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

दहेज

क्या यह वास्तव में परिवार के
गौरव का प्रतीक है;

या फिर हम अपनी प्यारी बेटियों को
किसी और की धन-लोलुपता का
शिकार बनाकर विदा कर रहे हैं?

प्रिय माता-पिता,

कृपया इस बारे में सोचिए।

मेरी प्यारी बहनों के लिए -

हम भी सृजनकर्ता हैं!

इतनी बहादुर और साहसी बनिए

कि जीवन आपके सामने

जो भी परिस्थिति लाए,

आप उसका दृढ़ता से सामना कर सकें।

आपके पास अपने संसार को

आकार देने की शक्ति है;

उसे अपनी इच्छा के अनुसार बदलने की

शक्ति भी आपके हाथों में है।



अन्नालयम



सुमित कुमार
सहायक श्रेणी प्रथम(डिपो)
मंडल कार्यालय, वेल्लोर



मैं दफ्तर को चलता हूँ

सुबह-सुबह कमरे से निकल
मैं दफ्तर को चलता हूँ,
मैं दफ्तर को चलता हूँ
पड़ रही हो या धूप या फिर,
काली आंधी आने वाली है।
तेज हवाओं में ये कपकपी है या
बदरी आने वाली है।
यूही चट्टानों की तरह अटल,
मैं धूल-गर्द से सुनता हूँ।
सुबह-सुबह कमरे से निकल
मैं दफ्तर को चलता हूँ,
मैं दफ्तर को चलता हूँ।
लगती है जब भूख मुझे,
लगती है जब भूख मुझे।
तब माँ की याद सताती है।
मन में उपजी ये भावना,
काम में ये बाधा बन कर आती है।
उन यादों को सहेज में
खुद को समझाता हूँ।
सुबह-सुबह कमरे से निकल

मैं दफ्तर को चलता हूँ,
मैं दफ्तर को चलता हूँ।
होती नहीं है काम खत्म पर
मैं दिन-दिन गिनता हूँ,
होगी छुट्टी होली दिवाली की
ये सोच-सोच कर मचलता हूँ।
सुबह-सुबह कमरे से निकल
मैं दफ्तर को चलता हूँ,
मैं दफ्तर को चलता हूँ।
बिस्तर पर लेटे दीवारों पर,
बिस्तर पर लेटे दीवारों पर
मेरी नजर अटक सी जाती है।
कोसो मीलों तक सोचते
घड़ी कहीं खो जाती है,
तब सबका खुश चेहरा और प्यार
याद कर कर के,
मेरे खुशी के आंसू बहता है।
सुबह-सुबह कमरे से निकल
मैं दफ्तर को चलता हूँ,
मैं दफ्तर को चलता हूँ।



अन्नालयम



कट्टबोम्मन के
सहायक श्रेणी तृतीय (सामान्य)
मंडल कार्यालय, तंजावुर



समय का महत्व



समय जीवन की सबसे मूल्यवान चीजों में से एक है। हम जानते हैं कि हमारा जीवन वास्तव में समय का ही एक समूह है, जो वर्षों, महीनों, सप्ताहों और दिनों में विभाजित है। इसलिए जीवन को सुखी और सार्थक बनाने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम अपने समय का सही उपयोग कैसे करते हैं। एक बार बीत गया समय कभी वापस नहीं आता। समय निरंतर चलता रहता है। इसका न तो कोई आरंभ है और न ही कोई अंत। इसे न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है। खर्च किया हुआ धन दोबारा कमाया जा सकता है, लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं पाया जा सकता। इसलिए हमें अपने समय का सदुपयोग

करना चाहिए और प्रत्येक क्षण को महत्वपूर्ण मानते हुए अपने जीवन को बेहतर एवं उत्पादक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम समय का सदैव सदुपयोग करें। हमें समय कभी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए, बल्कि उसे किसी उपयोगी और रचनात्मक कार्य में लगाना चाहिए। जो व्यक्ति समय के महत्व को समझता है और उसका उचित उपयोग करता है, वह अपने जीवन में सफल होता है। उसके पास अपने परिवार और मित्रों के लिए भी पर्याप्त समय रहता है। समय का सदुपयोग करना ही समय का वास्तविक मूल्य समझना है। यदि हमने अपना समय खो दिया, तो मानो हमने सब कुछ खो दिया।

इसलिए हम समाज में देखते हैं कि अनेक सफल लोग धन से अधिक अपने समय को महत्व देते हैं। समय ही हमें धन, समृद्धि और खुशियाँ प्राप्त करने का अवसर देता है, जबकि इस संसार की कोई भी वस्तु हमें बीता हुआ समय वापस नहीं दे सकती।

अतः हमें अपने कार्य, सामाजिक जीवन और विश्राम/नींद के लिए समय का उचित प्रबंधन करना चाहिए। समय का योजनाबद्ध विभाजन अत्यंत आवश्यक है। इससे व्यक्ति अपने सभी कार्यों को समय पर पूरा करने में सक्षम होता है।



अन्नालयम



सुमित कुमार मिश्रा
सहायक श्रेणी प्रथम तक.
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



पॉलिश किए हुए जूते एक ठंडी सुबह, एक बूढ़ा आदमी और ईमानदारी का सबक

यह 2002 की सर्दियों की बात है। मैं तब दसवीं कक्षा में पढ़ता था। रोज सुबह ट्रेन पकड़कर स्कूल जाता था। दिसंबर की सुबहों में धुंध बहुत होती थी। स्टेशन पर लोग कम दिखाई देते थे। चाय की दुकानों से भाप उठती रहती और थोड़ी दूर जाकर धुंध में मिल जाती।

उस दिन मैं कुछ जल्दी स्टेशन पहुँच गया था।

प्लेटफार्म पर लगभग सन्नाटा था। मैं इधर-उधर देख रहा था कि मेरी नज़र एक बूढ़े आदमी पर पड़ी। वह ट्रेक के पास वाली बेंच पर बैठा था।

उसकी उम्र कोई पैंसठ-सत्तर साल की होगी। उसने साफ-सुथरा, अच्छी तरह सिला हुआ सूट पहन रखा था। सिर पर टोपी थी और हाथ में छड़ी। उसके जूते बहुत चमक रहे थे। धुंधली रोशनी में भी उनकी चमक दिखाई दे रही थी। पहली नज़र में वह किसी पुराने जमाने के साहब जैसा लगता था।

उसने मुझे देखा और हाथ से बुलाया।

मैं उसके पास चला गया।

उसने मुझसे अंग्रेजी में कुछ कहा। उसकी

अंग्रेजी साफ थी, ऐसी अंग्रेजी जो मैंने अपने स्कूल के बहुत से अध्यापकों के मुँह से भी नहीं सुनी थी। फिर उसने मुझसे कुछ पैसे माँगे।

मैं कुछ देर उसे देखता रहा।

मुझे उसकी बात समझ में नहीं आई। ऐसे माँगने वाला आदमी ऐसा नहीं होता कम-से-कम तब तक तो मेरी यही समझ थी। उसके कपड़े अच्छे थे, बोलने का ढंग अच्छा था, हाथ में छड़ी थी, जूते चमक रहे थे। वह किसी ऐसे आदमी जैसा नहीं लगता था जिसे किसी स्कूल के लड़के से पैसे माँगने पड़ें।

मैंने धीरे से पूछा, सर, आपका बटुआ खो गया है क्या?

वह मेरी तरफ देखने लगा।

मैंने फिर पूछा, या कोई ऐसी परेशानी है कि आपको पैसे माँगने पड़ रहे हैं ?

उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आई। लेकिन उसकी आँखें थकी हुई थीं।

उसने कहा, नहीं, मेरे बच्चे। बटुआ नहीं खोया है। उससे ज्यादा कीमती चीज खोई है।

मैं चुप रहा।



अन्नालयम

“ईमानदारी”, उसने कहा।
फिर कुछ देर वह चुप बैठा रहा। जैसे आगे की बात कहने में उसे थोड़ी शर्म आ रही हो।

“मेरा नाम विक्रम सिन्हा है”, उसने कहा।
कभी सीमा शुल्क विभाग में बड़ा अफसर था।
मैं उसकी तरफ देखता रहा।

“उस समय मेरे पास सब कुछ था। बड़ा घर था, गाड़ी थी और समाज में इज्जत थी। किसी कमरे में जाता था तो लोग उठकर खड़े हो जाते थे। वह हँसा। हँसी में खुशी नहीं थी।”

“लेकिन आदमी को जो मिल जाता है, वह उसे थोड़े दिन बाद कम लगने लगता है।”

उसने छड़ी को दोनों हाथों में पकड़ लिया।
“पहले छोटी-छोटी चीजें आईं। किसी ने घड़ी दे दी। किसी ने चुपके से दराज में लिफाफा रख दिया। मैंने लिया। अपने आप से कहा इसमें क्या है? सब लेते हैं। फिर धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि यह लेना गलत नहीं है। मैं अफसर हूँ। मैं इसके लायक हूँ।”

वह बोलता गया।

“बीस साल ऐसे ही निकल गए। मेरे बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़े। मेरी पत्नी अच्छे कपड़े पहनती थी। घर में नौकर थे। लोग मुझे सफल आदमी समझते थे। मैं भी अपने को सफल ही समझता था। वह कुछ देर सामने देखता रहा।”

“फिर एक दिन मेरे दफ्तर में भ्रष्टाचार निरोधक अधिकारियों का एक दल आया।”

अब उसकी आवाज बहुत धीमी हो गई थी।

“किसी ने शिकायत की थी। उन्होंने सब खोज निकाला पैसा, छिपी हुई संपत्ति, खाते... जो कुछ मैंने वर्षों में जमा किया था। नौकरी चली गई। एक रात में सब बदल गया। जिस आदमी के कमरे में लोग खड़े होकर स्वागत करते थे, उसी आदमी को लोग देखने से कतराने लगे।”

वह रुका।

“मेरी पत्नी चली गई। वह यह सब सह नहीं सकी।”

प्लेटफार्म पर कहीं दूर से चाय के गिलासों की आवाज आ रही थी।

“बच्चे बड़े हुए। वे भी चले गए। उन्हें मेरे नाम से शर्म आती थी। मैंने अपने पोते-पोतियों को कभी नहीं देखा।”

उसने अपनी टोपी ठीक की।

“अब मैं सत्तर साल का हूँ। कभी इस स्टेशन पर बैठता हूँ, कभी दूसरे स्टेशन पर। मेरे पास यह एक अच्छा सूट बचा है। अभी शरीर पर ठीक आता है, इसलिए पहन लेता हूँ।”

मैं कुछ कह नहीं पा रहा था।

कुछ देर बाद मैंने पूछा, “आप मुझे यह सब क्यों बता रहे हैं?”

उसने मेरी तरफ देखा।

“क्योंकि तुमने पूछा।”

मैंने उसकी बात नहीं समझी।

वह बोला, “अधिकतर लोग मेरे पास से निकल जाते हैं। कोई देखता भी नहीं। कभी कोई आदमी सिक्का फेंक देता है। बस। तुम रुके और पूछने लगे कि क्यों माँग रहे हो।”

उसने बेंच पर हाथ रखा।

“यह अच्छी बात है। अभी तुम्हें पता है कि किसी आदमी से सवाल करना चाहिए। ठीक और गलत में फर्क करना चाहिए। बहुत से लोग यह फर्क बहुत जल्दी भूल जाते हैं।”

उसने छड़ी से जमीन पर हल्की-सी चोट की।

“मैं काम भी करता हूँ। पास की बस्ती के बच्चों को पढ़ाता हूँ। बच्चे और उनके घर वाले जितना दे सकते हैं, दे देते हैं। मगर हर दिन इतना नहीं मिलता कि पेट भर सके। तब यहाँ आ जाता हूँ।”

उसने अपने सूट की तरफ देखा।



अन्नालयम

“लोग इस कपड़े को देखते हैं और सोचते हैं कि इस आदमी के पास सब कुछ होगा। उन्हें क्या मालूम कि आदमी के पास कपड़े बच सकते हैं और जीवन नहीं।”

मैं चुप था।

वह बोला, “मैं भीख माँगते हुए झूठ नहीं बोलता। किसी से कहता नहीं कि मेरा बटुआ चोरी हो गया। बीमारी का बहाना नहीं बनाता। बस कहता हूँ मुझे जरूरत है। जो दे दो।”

उसकी आँखों में पहली बार थोड़ी-सी कठोरता दिखाई दी।

“पहले मैंने दूसरों को धोखा देकर पैसा लिया था। अब बिना धोखा दिए माँगता हूँ। इसमें शर्म तो है, लेकिन एक तरह की शांति भी है।”

ट्रेन आने की आवाज दूर से सुनाई देने लगी थी।

वह मेरी ओर झुका।

“तुम अभी छोटे हो। आगे बहुत मौके आएँगे। कई बार गलत रास्ता आसान लगेगा। जल्दी पैसा मिलेगा। लोग कहेंगे सब करते हैं। तुम भी कर लो।”

उसने अपने जूतों की ओर देखा।

“उस समय इन जूतों को याद करना।”

मैंने जूतों की तरफ देखा। वे सचमुच बहुत चमक रहे थे।

“चमक देखोगे तो लगेगा कि आदमी ने अच्छी जिंदगी बिताई है। लेकिन हर चमक के पीछे रोशनी नहीं होती।”

ट्रेन प्लेटफार्म में आ चुकी थी।

वह धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ। छड़ी के सहारे चलने लगा। कुछ कदम जाकर रुका। पीछे मुड़ा।

“ईमानदारी से जीना”, उसने कहा, “आदमी के पास आखिर में यही चीज बचती है। फिर वह चला गया।”

मैं बहुत देर तक वहीं बैठा रहा।

ट्रेन चली गई। अगली ट्रेन आई। फिर मैं उसमें बैठकर स्कूल चला गया। लेकिन वह आदमी मेरे साथ ही चलता रहा।

उसके बाद कई साल बीत गए।

मैं बड़ा हुआ। नौकरी की। लोगों को आगे बढ़ते देखा। कुछ लोग मेहनत से आगे बढ़े, कुछ ने रास्ते छोटे कर लिए। कई बार मुझे भी लगा कि थोड़ा-सा समझौता कर लेने में क्या नुकसान है। आखिर सब करते हैं।

लेकिन ऐसे समय में मुझे वही बूढ़ा आदमी याद आता।

उसका सूट।

उसकी टोपी।

उसकी छड़ी।

और उसके चमकते हुए जूते।

एक रेलवे स्टेशन पर बैठा वह बूढ़ा आदमी, जो एक स्कूल के लड़के से दस रुपये माँग रहा था। तब मुझे समझ में आता कि बेईमानी आदमी से केवल उसका पैसा या नौकरी नहीं छीनती। वह धीरे-धीरे आदमी के भीतर से कुछ निकालती रहती है। पहले वह चीज दिखाई नहीं देती। फिर एक दिन आदमी के पास घर, गाड़ी, कपड़े और जूते सब होते हैं, लेकिन अपने ही जीवन को देखने के लिए कुछ नहीं बचता।

2002 की उस ठंडी सुबह मैंने कोई बड़ी किताब नहीं पढ़ी थी। किसी अध्यापक ने मुझे ईमानदारी पर भाषण भी नहीं दिया था।

एक बूढ़ा आदमी मिला था।

उसने मुझसे दस रुपये माँगे थे।

लेकिन उस दिन उसने मुझे दस रुपये से बहुत बड़ी चीज दे दी थी यह समझ कि आदमी की सबसे बड़ी गरीबी जेब की नहीं होती।

और शायद सबसे बड़ा धन भी वही है, जिसे आदमी किसी तिजोरी में नहीं रख सकता।



अन्नालयम



बी शांति
सहायक श्रेणी प्रथम(स्ना.)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



मौसमी फ्लू का जोखिम बचाव के उपाय

मौसमी फ्लू और उससे होने वाली संभावित गंभीर जटिलताओं के जोखिम को कम करने का सबसे प्रभावी तरीका “हर वर्ष फ्लू का टीका लगवाना है।” इसके अलावा, बीमार लोगों से दूरी बनाए रखना, खाँसते या छींकते समय मुँह ढकना और हाथों को नियमित रूप से धोना जैसे बचाव के उपाय भी रोगाणुओं के प्रसार को रोकने और फ्लू जैसी श्वसन संबंधी बीमारियों से बचने में सहायक होते हैं। मौसमी फ्लू के टीके उन तीन इन्फ्लुएंजा वायरस से सुरक्षा प्रदान करते हैं, जिनके आगामी मौसम में सबसे अधिक फैलने की संभावना होने का अनुमान शोध के आधार पर लगाया जाता है।

- 1. निकट संपर्क से बचे :** बीमार लोगों के निकट संपर्क में आने से बचें। यदि आप बीमार हैं, तो दूसरों से उचित दूरी बनाए रखें, ताकि वे भी बीमार न पड़ें। शारीरिक दूरी बनाए रखने से वायरस के प्रसार का जोखिम कम करने में मदद मिलती है।
- 2. बीमार होने पर घर पर रहें :** यदि संभव हो, तो बीमार होने पर कार्यालय, स्कूल और आवश्यक कार्यों के लिए बाहर जाने के बजाय घर पर रहें।
- 3. मुँह और नाक को ढकें :** खाँसते या छींकते समय अपने मुँह और नाक को ढकें। इससे आपके आसपास के लोगों को संक्रमण से बचाने में मदद मिल सकती है। माना जाता है कि इन्फ्लुएंजा वायरस मुख्य रूप से उन बूंदों के माध्यम से फैलता है, जो फ्लू से संक्रमित व्यक्ति के खाँसने, छींकने या बात करने पर निकलती हैं। मास्क पहनना एक अतिरिक्त बचाव उपाय है, जिसे आप स्वयं और दूसरों को संक्रमण से और अधिक सुरक्षित रखने के लिए अपना सकते हैं। मास्क पहनने से आसपास मौजूद संक्रमित कणों को साँस के साथ अंदर जाने से भी बचाव हो सकता है।
- 4. हाथों को स्वच्छ रखें :** हाथों को बार-बार धोने से आप रोगाणुओं से अपनी रक्षा कर सकते हैं। यदि साबुन और पानी उपलब्ध न हो, तो अल्कोहल आधारित हैंड रब/हैंड सैनिटाइज़र का उपयोग करें।
- 5. आँखों, नाक या मुँह को छूने से बचें :** जब कोई व्यक्ति रोगाणुओं से दूषित किसी वस्तु को छूने के बाद अपनी आँखों, नाक या मुँह को छूता है, तो रोगाणु उसके शरीर में प्रवेश कर सकते हैं और संक्रमण फैल सकता है।
- 6. स्वच्छ एवं शुद्ध हवा के लिए कदम उठाएं :** बाहर की ताजी हवा को अंदर आने दें, घर या कार्यालय की अंदरूनी हवा को शुद्ध करें या संभव हो तो खुले स्थानों पर रहें। स्वच्छ हवा वायरस के संपर्क में आने के जोखिम को कम कर सकती है।
- 7. अच्छी स्वच्छता और स्वस्थ आदतें अपनाएं :** बार-बार छुई जाने वाली सतहों, जैसे काउंटरटाप, रेलिंग और दरवाज़ों के हैंडल आदि की नियमित सफाई करें। इससे कुछ बीमारियों के प्रसार को रोकने में मदद



अन्नालयम

मिल सकती है। इसके साथ ही पर्याप्त नींद लें, नियमित रूप से शारीरिक गतिविधि करें। तनाव को नियंत्रित करें। पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ पिएँ। पौष्टिक एवं संतुलित भोजन करें।

8. स्कूल में फ्लू से बचाव : अपने बच्चे के स्कूल, बाल देखभाल केंद्र और/या कालेज से यह जानकारी प्राप्त करें कि फ्लू या किसी अन्य बीमारी के प्रकोप की स्थिति में उनकी क्या व्यवस्था है और क्या वहाँ फ्लू का टीकाकरण उपलब्ध कराया जाता है।

स्कूल, बाल देखभाल केंद्र और/या कालेज से पूछें कि क्या वे बार-बार छुई जाने वाली वस्तुओं और सतहों की नियमित सफाई करते हैं तथा क्या वहाँ पर्याप्त मात्रा में टिशू, साबुन, पेपर टॉवल, अल. कोहल-आधारित हैंड रब और डिस्पोजेबल वाइप्स उपलब्ध हैं।

यह भी पूछें कि क्या वे परिसर में स्वच्छ हवा बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाते हैं।

यह जानकारी प्राप्त करें कि बीमार विद्यार्थियों और कर्मचारियों को अन्य लोगों से किस प्रकार अलग रखा जाता है और उनके घर जाने तक उनकी देखभाल कौन करेगा। साथ ही, बीमार विद्यार्थियों और कर्मचारियों के लिए अनुपस्थिति संबंधी नीति के बारे में भी जानकारी लें।

9. कार्यस्थल पर फ्लू से बचाव : अपने नियोक्ता से यह जानकारी प्राप्त करें कि फ्लू या किसी अन्य बीमारी के प्रकोप की स्थिति में क्या व्यवस्था की गई है और क्या कार्यस्थल पर फ्लू का टीकाकरण उपलब्ध कराया जाता है।

रोगाणुओं को हटाने के लिए बार-बार छुई जाने वाली वस्तुओं और सतहों, जैसे दरवाजों के हैंडल, कीबोर्ड और फोन आदि की नियमित सफाई करें।

सुनिश्चित करें कि कार्यस्थल पर पर्याप्त मात्रा में टिशू, साबुन, पेपर टॉवल, अलकोहल-आधारित हैंड रब और डिस्पोजेबल वाइप्स उपलब्ध हों। अन्य कर्मचारियों को अपने कार्यों के बारे में प्रशिक्षित करें, ताकि यदि आप या आपके परिवार का कोई सदस्य बीमार हो जाए और आपको घर पर रहना पड़े, तो वे आपके कार्यों को संभाल सकें। यदि कार्यस्थल पर रहते हुए आपको बीमार महसूस होने लगे, तो जितनी जल्दी संभव हो, घर चले जाएँ।



के आर लोकेश कुमार शाह
सहायक श्रेणी प्रथम(रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



वंदेमातरम

यह भारत की गान है
माथे की तिलक है
यह भारत की आन है।
देश को एकजुटता में
'वंदेमातरम' का नारा फैला
जिसके कारण स्वतंत्रता की

आवा फैला
नमन करते हैं इस मातृभूमि को
वंदन करना हमारा सबका दायित्व है
खुलकर बोलो यह नारा
'वंदेमातरम' सबको प्यारा।

अन्नालयम



तुल्या नरेंद्रन
सुपुत्री गीथा सुंदरेसन
सहायक श्रेणी द्वितीय(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



शौर्य कुमार पण्डित
सुपुत्र राहुल कुमार पण्डित
सहायक श्रेणी प्रथम(डिप्लो)
मंडल कार्यालय, चेन्नै

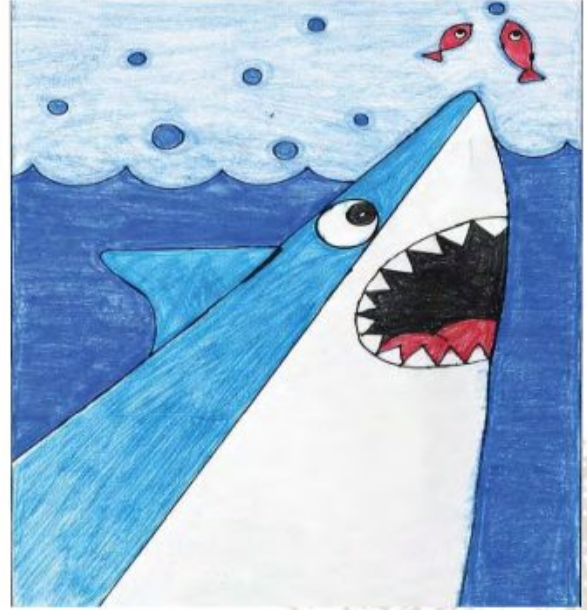


मास्टर कयन सिंह
सुपौत्र बी शांति
सहायक श्रेणी प्रथम(सामान्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

अन्नालयम



डी स्वेथिका
सुपुत्री आर उषा
सहायक श्रेणी द्वितीय(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



पी एस मझिल समुद्रा
सुपुत्री सेल्वमथी प्रभाकर
सहायक श्रेणी द्वितीय(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



मास्टर पी एस आदि पुझल वैदन
सुपुत्र सेल्वमथी प्रभाकर
सहायक श्रेणी द्वितीय(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

अन्नालयम



काव्या गुप्ता
सुपुत्री कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



मास्टर गहन केशव शाह के एल
सुपुत्र के आर लोकेश कुमार शाह
सहायक श्रेणी प्रथम(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



भाव्या जी
सहायक श्रेणी.III(तक.)
मंडल कार्यालय, तंजावुर





अन्नालयम



मास्टर आदित्या
सुपुत्र के जूलियट
सहायक श्रेणी प्रथम (तक.)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



सुपुत्री क्रिस्टिना आनंदी
सहायक श्रेणी द्वितीय(तक.)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै



जिनेटे स्टिफन्ना एस



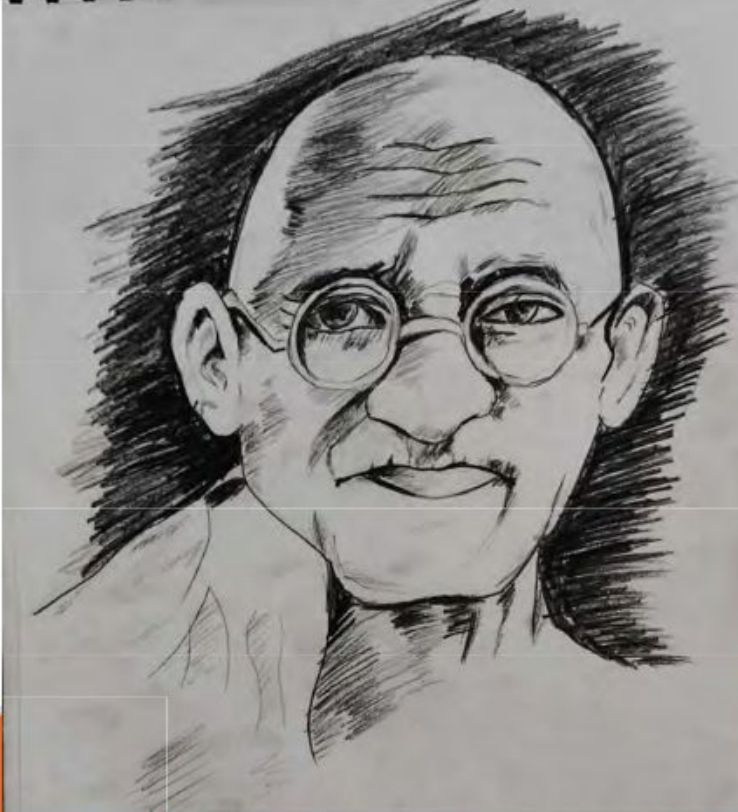
बचपन सिर्फ खेलने का नाम नहीं, बल्कि
सीखने और समझने की दौर है।



अन्नालयम



आर अरोग्य जेनिफर
सहायक श्रेणी प्रथम(संचालन)
मंडल कार्यालय, तंजावुर



काव्या गुप्ता
सुपुत्री कुणाल कुमार गुप्ता
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

अन्नालयम

वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना में भाग लेनेवाले कार्मिकों की सूची

क्रम.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पुरस्कार	नकद पुरस्कार
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै			
1	धान्या सुब्रमणियन, सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
2	शमूएल पौल, सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
3	निधिन जोस अब्रहम, प्रबंधक(ई.एम.)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
4	एन प्रगा, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
5	नीतू आर, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
6	अनुराज के वी, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
7	ए गायत्री, कनिष्ठ अभियंता(सिविल)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
8	जे बी अब्रोस शैरिन जेसिल्ला, स.श्रे.II(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
9	अरुल पावै एन, प्रबंधक(गुणवत्ता नियंत्रण)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
10	निर्मल राज, प्रबंधक(लेखा)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
मण्डल कार्यालय, चेन्नै			
1	पी विनोथिनी, सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
2	आर दिव्या, सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
3	एन राजन, प्रबंधक(डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
4	प्रीता एम, सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
5	टी हेमा प्रिया, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
6	सी कुमारवेल, प्रबंधक(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
7	ए वी ग्रेस रजीना, सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
8	डी मोहन प्रिया, सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
9	महेश्वरी पी, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
10	दिशा शर्मा, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-

अन्नालयम

वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना में भाग लेनेवाले कार्मिकों की सूची

क्रम.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पुरस्कार	नकद पुरस्कार
मण्डल कार्यालय, तूतीकोरिन			
1	के पाक्कियानाथन, प्रबंधक(गुणवत्ता नियंत्रण)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
2	आनंद एम, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
3	टी पी कार्तिकेयन, प्रबंधक(संचालन)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
4	के राजा भूमिनाथन, प्रबंधक(लेखा)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
5	एस अरुमोलिवर्मन, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
6	सुजितलिन आशा, प्रबंधक(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
7	चिंदा मीरान मोहिदीन, प्रबंधक(संचालन)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
8	मणिकंदन पी, सहायक श्रेणी.III(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
9	लक्ष्मीनारायणन एस, सहायक श्रेणी.I(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
10	एल कार्तिक, सहायक श्रेणी.III(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
मण्डल कार्यालय, कडलूर			
1	यू नवनीथा कृष्णन, सहायक श्रेणी.III(लेखा)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
2	बाला मुरली जी, सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
3	तमिलमनी आर, सहायक श्रेणी.II(डिपो)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
4	सिरंजीवी ए, सहायक श्रेणी.II(सामान्य)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
5	श्रीदेवी वी, सहायक श्रेणी.I(सामान्य)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
6	अरुणा देवी पी, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
7	ए शजिदा, सहायक श्रेणी.I(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
8	सौंदरराजन एन, सहायक श्रेणी.II(डिपो)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
9	सुब्रमनियन आर, सहायक श्रेणी.II(डिपो)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
10	एस कलैवाणी, प्रबंधक(गुणवत्ता नियंत्रण)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-

अन्नालयम

वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना में भाग लेनेवाले कार्मिकों की सूची

क्रम.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पुरस्कार	नकद पुरस्कार
मण्डल कार्यालय, कोयंबटूर			
1	अखिलेश्वरन के, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
2	कन्नन पी, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
3	बालाजी के वी, प्रबंधक(लेखा)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
4	कृष्ण कुमार पी सी, सहायक श्रेणी.I(सामान्य)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
5	आतीरा ए, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
6	गोआर्बाचेव के, सहायक श्रेणी.III(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
7	एन जोय, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
8	के सुब्रमण्यन, प्रबंधक(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
9	आर कार्तिकेयन, सहायक श्रेणी.III(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
10	सौम्या रसिका एस एस, सहायक श्रेणी.III(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
मण्डल कार्यालय, वेल्लोर			
1	मालू ए, सहायक श्रेणी.I(तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
2	सनप्पा मणिकुमार, प्रबंधक(लेखा)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
3	अनूप आर, प्रबंधक(लेखा)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
4	बी नागमल्ली, सहायक श्रेणी.I(सामान्य)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
5	राहुल देव ए एस, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
6	पवित्रा आर, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
7	अस्वती पी, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
8	अधुल एम वी, सहायक श्रेणी.III(लेखा)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
9	के कनगराज, प्रबंधक(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
10	थिरुमलेश जी, सहायक श्रेणी.I(संचालन)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-

अन्नालयम

वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए मूल रूप से हिंदी टिप्पण एवं आलेखन योजना में भाग लेनेवाले कार्मिकों की सूची

क्रम.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पुरस्कार	नकद पुरस्कार
मण्डल कार्यालय, तंजावुर			
1	एस विमलराज, सहायक श्रेणी.II(डिपो)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
2	भव्या जी, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	प्रथम पुरस्कार	₹.6,000/-
3	गिरीश देथ जी, प्रबंधक(गुणवत्ता नियंत्रण)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
4	के कट्टबोम्मन, सहायक श्रेणी.III(सामान्य)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
5	आर मरीस्वरन, सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)	द्वितीय पुरस्कार	₹.5,500/-
6	पी मदन कुमार, सहायक श्रेणी.I(डिपो)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
7	नेर्मे के एम, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
8	टी वी अरविन्द, प्रबंधक(संचालन)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
9	पी वेंकटेशन, सहायक श्रेणी.III(डिपो)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-
10	मोहनराज बी, सहायक श्रेणी.III(सामान्य)	तृतीय पुरस्कार	₹.5,000/-



हेमा श्वेता ई
सहायक श्रेणी द्वितीय(आ.)
मंडल कार्यालय, तंजावुर

नन्हीं सी परी

नन्हीं सी परी बनकर आई,
घर में खुशियों की बहार लाई।
उसकी हांसी में चांदनी है,
उसकी आंखों में प्यारी कहानी है।

नन्हें कदमों से सपने सजाए,
सबके दिल में प्यार जगाए।
हमारी प्यारी गुड़िया रानी,
सबसे सुंदर, सबसे सयानी

अन्नालयम

भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र को प्राप्त राजभाषा शील्ड पुरस्कार



नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति(उपक्रम) चेन्नै के दिनांक : 20.07.2026 को आयोजित 18वीं अर्ध वार्षिक बैठक में भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै को राजभाषा हिंदी के कार्यन्वयन में किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए द्वितीय पुरस्कार एवं राजभाषा गृह पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रथम पुरस्कार के रूप में शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री असीम छाबड़ा, महाप्रबंधक(क्षेत्र) एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण।



नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति (उपक्रम) के दिनांक : 20.07.2026 को आयोजित 18वीं अर्ध वार्षिक बैठक में भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, चेन्नै को राजभाषा हिंदी के कार्यन्वयन में किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री नवीन कुमार, मंडल प्रबंधक एवं अन्य कर्मिकगण।

नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, वेल्लोर के दिनांक : 01.09.2026 को आयोजित अर्ध वार्षिक बैठक में भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, वेल्लोर को वर्ष 2026-27 (पहली बैठक) नराकास की रिपोर्ट का त्वरित प्रेषण हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में शील्ड प्राप्त करते हुए श्री संदीप कुमार, मण्डल प्रबंधक एवं अन्य कर्मिकगण।

अन्नालयम

दिनांक : 26.09.2026 को तिरुवण्णामलै में भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र के प्रबंधकों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन की झलकियाँ



राजभाषायी गतिविधियाँ



दि.16.07.2026 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के सामूहिक चित्र



दि.17.09.2026 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के सामूहिक चित्र



दि.25.06.2026 को आयोजित विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक



दि.18.09.2026 को हिंदी पखवाड़े के दौरान वर्ग.I अधिकारियों के लिए आयोजित अंत्याक्षरी प्रतियोगिता के सामूहिक चित्र